

भण्डारण भारती

अंक-67



केन्द्रीय भण्डारण निगम
जन जन के लिए भंडारण





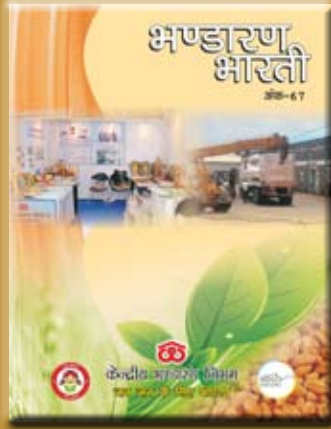
नये साल का नया सबेरा

नए साल का, नया सबेरा,
जब, अम्बर से धरती पर उतरे,
तब, शान्ति, प्रेम की पंखुरियाँ,
धरती के कण-कण पर बिखरें।
चिड़ियों के कलरव गान के संग,
मानवता की शुरु कहानी हो,
फिर न किसी का लहू बहे,
न किसी आँख में पानी हो।
शबनम की सतरंगी बूँदें,
बरसे घर-घर द्वार,

मिटे गरीबी, भुखमरी,
नफरत की दीवार।
ठण्डी-ठण्डी पवन खोल दे,
समरसता के द्वार,
सत्य, अहिंसा और प्रेम,
सीखे सारा संसार।

सूरज की ऊर्जामय किरणें,
अन्तरमन का तम हर ले,
नई सोच के नव प्रभात से,
घर घर मंगल दीप जलें।

- बृजेन्द्र श्रीवास्तव 'उत्कर्ष'



अक्टूबर-दिसम्बर, 2017

मुख्य संरक्षक

जे.एस. कौशल
प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

अरविन्द चौधरी
समूह महाप्रबंधक (कार्मिक)

मुख्य संपादक

नम्रता बजाज
प्रबंधक (राजभाषा)

संपादक

महिमानन्द भट्ट
वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

सहायक संपादक

रेखा दुबे
एस.पी. तिवारी

संपादन सहयोग

नीलम खुराना, विजयपाल सिंह,
शशि बाला

केंद्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रान्ति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110016

यह पत्रिका निगम की वेबसाइट
www.cewacor.nic.in
पर भी उपलब्ध है।

मुद्रक: चन्दु प्रैस
डी-97, शकरपुर, दिल्ली-92
दूरभाष: 22526936

भण्डारण भारती

त्रैमासिक पत्रिका

अंक-67

| विषय | पृष्ठ संख्या |
|--|--------------|
| ✦ प्रबंध निदेशक की कलम से... | 03 |
| ✦ सम्पादकीय | 04 |
| आलेख | |
| ○ 21वीं शताब्दी के वैश्विक परिदृश्य... - डॉ. जगदीश शर्मा | 05 |
| ○ विश्व खाद्य दिवस - एस.के. दुबे | 11 |
| ○ महात्मा गौतम बुद्ध और... - डॉ. मीना राजपूत | 13 |
| ○ फैलता प्रदूषण और समाधान - मीनाक्षी गुप्ता | 19 |
| ○ लेखकों की विविध लेखन कलाएँ - महिमानन्द भट्ट | 26 |
| क्षेत्रीय कार्यालय-एक परिचय | |
| ➤ क्षेत्रीय कार्यालय-रायपुर एवं कोलकाता | 28 |
| कविताएं | |
| ☆ एक भिखारी की कहानी... - सागरिका दत्ता | 10 |
| ☆ भारतीय संस्कृति - सच्चिदानंद राय | 12 |
| साहित्यिकी | |
| ▶ हार की जीत (कहानी) - सुदर्शन | 16 |
| विविध | |
| ▲ रिटायरमेंट की पहली वर्षगांठ - के.सी.एस. नेगी | 21 |
| ▲ विचारों का मैलापन - रेखा दुबे | 22 |
| ▲ बचपन - मीनाक्षी गंभीर | 23 |
| ▲ सुबह जल्दी क्यों उठें - रामअवतार प्रसाद | 31 |
| ▲ जीवन संध्या - एस.पी.एस. राठौर | 43 |
| ▲ बढ़ती हिंसा : जिम्मेदार कौन ? - नम्रता बजाज | 45 |
| ▲ हिंदी साहित्य में योगदान... - एस.पी. तिवारी | 47 |
| ▲ तेरे नयना क्यूं भर आए - रजनी सूद | 48 |
| ▲ मित्र या मुसीबत - प्रो. बलवंत रंगीला | 49 |
| अन्य गतिविधियां | |
| ★ सचित्र गतिविधियां | 32 |
| ★ खेल समाचार | 50 |

पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। निगम का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। रचनाओं की मौलिकता के लिए भी संबंधित लेखक स्वयं जिम्मेदार हैं।

केन्द्रीय भण्डारण निगम

लक्ष्य, दूरदर्शिता एवं उद्देश्य

लक्ष्य

सामाजिक दायित्वपूर्ण एवं पर्यावरण-अनुकूल ढंग से विश्वसनीय, किफायती, मूल्य संवर्द्धक तथा एकीकृत भण्डारण एवं लॉजिस्टिक्स समाधान सुलभ कराना।

दूरदर्शिता

हितधारी की संतुष्टि पर बल देते हुए भारत की विकासशील अर्थव्यवस्था के सम्बल के रूप में एकीकृत भण्डारण अवसंरचना एवं अन्य लॉजिस्टिक सेवाएं प्रदान करने वाले बाजार के एक अग्रणी संसाधक के रूप में खड़ा होना।

उद्देश्य

- वैज्ञानिक भण्डारण एवं संबंधित अवसंरचनात्मक सुविधाएं उपलब्ध कराते हुए कृषि, उद्योग, व्यापार व अन्य क्षेत्रों की परिवर्तनशील आवश्यकताओं की पूर्ति करना।
- भण्डारण, हैंडलिंग एवं वितरण के दौरान होने वाली हानियों को कम करना।
- पर्यावरण अनुकूल विधियां प्रयोग करते हुए पैस्ट नियंत्रण सेवाओं के क्षेत्र में प्रमुख भूमिका निभाना।
- बैंकिंग संस्थाओं एवं गैर-बैंकिंग वित्तीय कम्पनियों के माध्यम से भण्डारित वस्तुओं के लिए ऋण उपलब्ध कराने की दिशा में भण्डारण (विकास एवं विनियमन) अधिनियम, 2007 के क्रियान्वयन में सहयोग करना।
- पोर्ट हैंडलिंग, प्रापण एवं वितरण, कोल्ड चेन, भण्डारण वित्त पोषण, 3 पी.एल., परामर्शी सेवाएं, मल्टी मॉडल परिवहन जैसे क्षेत्रों में फारवर्ड और बैकवर्ड इंटीग्रेशन द्वारा लॉजिस्टिक्स वेल्थ चेन की योजना बनाना और विविधता लाना।
- भण्डारण और लॉजिस्टिक्स क्षेत्र में वैश्विक उपस्थिति दर्ज करना।
- ग्राहक संतुष्टि हेतु कर्मचारियों की प्रतिबद्धता, अभिप्रेरणा तथा उत्पादकता बढ़ाने के उद्देश्य से मानव संसाधन विकास कार्यक्रम की योजना बनाना तथा क्रियान्वित करना।



प्रबंध निदेशक की कलम से...



‘भंडारण भारती’ पत्रिका के इस अंक के माध्यम से मैं निगम के समस्त अधिकारियों, कर्मचारियों एवं पत्रिका के सभी पाठकों के सुखद, समृद्ध एवं मंगलमय भविष्य की कामना करता हूँ। गत वर्ष की उपलब्धियों को आगे बढ़ाते हुए हम सभी को इस वर्ष निगम की सफलता हेतु नए उत्साह से कार्य करते हुए भविष्य की नई योजना बनाने का संकल्प लेना होगा।

किसी भी संगठन के कार्यकलापों के बारे में जानकारी प्राप्त करने और अधिकारियों एवं कर्मचारियों की लेखन प्रतिभा को उजागर करने में गृह पत्रिका का विशेष महत्व होता है। निगम की पत्रिका अपने इस उद्देश्य में सफल रही है जिसके परिणामस्वरूप इस पत्रिका को नराकस (उपक्रम), दिल्ली द्वारा श्रेष्ठ गृह पत्रिका पुरस्कार से सम्मानित किया गया। अपने विभिन्न कार्यकलापों के साथ-साथ निगम के अंशधारियों की 55वीं वार्षिक साधारण बैठक के अवसर पर अध्यक्ष महोदय द्वारा “भंडारण भारती-राजभाषा विशेषांक” का विमोचन भी किया गया जिसमें गणमान्य व्यक्तियों के संदेश सहित भंडारण एवं अन्य विषयों पर भी लेख प्रकाशित किए गए। राजभाषा की प्रगति के लिए निगम द्वारा सभी स्तरों पर प्रयास जारी हैं। इस दिशा की ओर अग्रसर होते हुए निगम को अखिल भारतीय स्तर पर राजभाषा हिंदी में उत्कृष्ट कार्य-निष्पादन के लिए माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण मंत्री एवं माननीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं सार्वजनिक वितरण राज्य मंत्री के करकमलों से वर्ष 2016-17 के लिए द्वितीय पुरस्कार तथा क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद को विशेष प्रशंसा पुरस्कार से सम्मानित किया जाना प्रसन्नता की बात है। राजभाषा गतिविधियों को विस्तार देने के लिए निगमित कार्यालय द्वारा नवंबर, 2017 में दिल्ली स्थित नराकास के विभिन्न सदस्य उपक्रमों के लिए प्रतियोगिता का सफल आयोजन भी किया गया।

खाद्यान्नों के सुरक्षित भंडारण एवं आपूर्ति के लिए वैज्ञानिक भंडारण तकनीकों के विकास के साथ-साथ पैस्ट नियंत्रण सेवा के क्षेत्र में भी निगम महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। निगम की कार्य प्रणाली में गति लाने के उद्देश्य से नई भर्ती करने पर विशेष बल दिया गया है और वेअरहाउस स्तर तक कम्प्यूटरीकरण के लिए भी कदम उठाए गए हैं। मुझे यह बताते हुए खुशी हो रही है कि निगम ने अब तक अनेक क्षेत्रों में नई ऊंचाइयों को प्राप्त किया है और वर्ष 2016-17 के दौरान निगम के बोर्ड ने गत वर्ष के 88 प्रतिशत की तुलना में 142 प्रतिशत की दर से लाभांश दिए जाने की सिफारिश की जो एक रिकार्ड वृद्धि और उपलब्धि है।

निगम निगमित सामाजिक दायित्व के प्रति भी अत्यंत उत्तरदायी है जिसके अंतर्गत स्कूलों, दिव्यांगों, खिलाड़ियों, महिला सशक्तिकरण तथा स्वास्थ्य सुविधाओं आदि के लिए वित्तीय सहायता प्रदान की जाती है। निगम द्वारा ‘विश्व खाद्य दिवस’ का आयोजन भी किया गया। ‘स्वच्छ भारत अभियान’ के अंतर्गत निगमित कार्यालय में दिनांक 15 सितंबर, 2017 से 02 अक्टूबर, 2017 तक ‘स्वच्छता पखवाड़ा’ का आयोजन किया गया और स्वच्छता की शपथ भी ली गई। दिनांक 30 अक्टूबर से 04 नवंबर, 2017 तक ‘सतर्कता जागरूकता सप्ताह’ का आयोजन किया गया जिसका विषय था “मेरा लक्ष्य - भ्रष्टाचार मुक्त भारत”। निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों द्वारा शपथ लेकर सतर्कता जागरूकता सप्ताह आरम्भ किया गया। गत वर्ष की भांति इस वर्ष भी ‘सतर्कता-एक परिदृश्य’ पुस्तिका प्रकाशित की गई। यह प्रसन्नता का विषय है कि इन कार्यक्रमों में निगम के सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के गत अंकों की भांति इस अंक के माध्यम से भी सभी को निगम के कार्यकलापों की महत्वपूर्ण जानकारी मिलेगी और निगम के अधिकारी एवं कर्मचारी अपने अथक प्रयासों से निरंतर कार्य करते हुए एक नया कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ेंगे। मैं इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन की कामना करते हुए अपनी हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

१
जि.एस. कौशल

(जे.एस. कौशल)
प्रबंध निदेशक

संपादकीय



कार्पोरेट जगत की गृह पत्रिका दर्पण के रूप में कार्य करती है। अतः इसका प्रकाशन कार्य अत्यन्त महत्वपूर्ण होता है। कार्यालय के कार्यकलापों को पत्रिका में शानदार तरीके से प्रस्तुत करना भी एक कला है। इस अंक में हमारे निगम की गतिविधियों को शामिल करते हुए एक नये रूप में विभिन्न विषयों पर अधिकारियों और कर्मचारियों के लेख प्रकाशित किए गए हैं, ताकि पाठकों की इन्हें पढ़ने में रोचकता बनी रहे।

राजभाषा नीति एवं नियमों के अनुसार सरकारी कामकाज का अनुपालन सुनिश्चित करने के लिए हमारा निगम सदैव तत्पर है। राजभाषा के कार्य को मान्यता प्रदान करते हुए निगम को उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन के लिए मंत्रालय से राजभाषा पुरस्कार प्राप्त हुआ है जो निगम की महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इस अंक में हमने अपने स्थायी स्तम्भों को तो प्रकाशित किया ही है, साथ ही 'विश्व खाद्य दिवस' और अनुवाद जैसे विषयों को भी इसमें स्थान दिया है। हमारा निगम अपने मुख्य व्यवसाय वैज्ञानिक भण्डारण के क्षेत्र में कार्य करते हुए निगमित सामाजिक दायित्व के प्रति अपनी भूमिका बखूबी निभा रहा है। इसके अतिरिक्त, किसान विस्तार सेवा योजना के अन्तर्गत आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों के माध्यम से देश के किसानों के लिए महत्वपूर्ण कार्य भी कर रहा है, इसलिए इन गतिविधियों सहित अन्य उल्लेखनीय गतिविधियों जैसे वार्षिक साधारण बैठक, हिन्दी पखवाड़ा, हिन्दी कार्यशाला, सतर्कता जागरूकता सप्ताह, स्वच्छता पखवाड़ा आदि तिमाही गतिविधियों को इस अंक में विशेष स्थान दिया गया है।

सभी पाठकों को साथ लेकर हमें इस पत्रिका को और भी बेहतर बनाने के लिए निरन्तर प्रयास करने होंगे ताकि कार्य की उत्कृष्टता बनी रहे और यह पत्रिका अपने काम के अनुरूप सभी मंचों से सदैव सम्मानित होती रहे।

(नम्रता बजाज)
मुख्य संपादक

21वीं शताब्दी के वैश्विक परिदृश्य में अनुवाद की भूमिका

डॉ. जगदीश शर्मा*

अनुवाद के अनेक प्रकार हैं परन्तु प्रमुख अनुवाद चिंतकों ने उन सभी में सम्प्रेषण को ही सर्वाधिक केंद्रीय उद्देश्य स्वीकार किया है। सम्प्रेषण के माध्यम से अनुवाद संस्कृतियों को जोड़ता है, सेतु का कार्य करता है जिससे किसी एक कालखंड में संचित ज्ञान, संस्कृति और सूचना भंडारों का आने वाली पीढ़ियों तक संचार होता है। भारत बहुभाषी राष्ट्र है जिसके हर प्रदेश में संस्कृति और भाषायी विविधता के अपने-अपने रंग-रूप देखने को मिलते हैं। लगभग 1652 भाषाएँ (मुख्य एवं उपभाषाओं-बोलियों सहित) भारत में बोली जाती हैं और हाल ही में भारतीय जन भाषा सर्वेक्षण में 740 से अधिक भाषाओं के सक्रिय व्यवहार में होने की पुष्टि की गई है। भाषायी एवं सांस्कृतिक विविधता के साथ भारत में विश्व के किसी भी अन्य राष्ट्र की अपेक्षा भौगोलिक विलक्षणता सर्वाधिक है। कन्याकुमारी से कश्मीर तक या फिर कच्छ से कामरूप तक देश की बनावट-बुनावट विविधता लिए हुए है। पर्वत, मैदान, वन्य सम्पदा की विविधता, जलवायु एवं मौसम की अनुकूलता – प्रतिकूलता आदि अनंत ऐसे कारक हैं जो भारत को विशिष्ट बनाते हैं।

इस प्रकार की विविधता लिए हुए देश में स्वाभाविक रूप से रहन-सहन, बोलचाल, खान-पान, व्यवहार, वेश-भूषा एवं भाषायी प्रयोग स्थानीय परिस्थितियों एवं आवश्यकताओं के अनुरूप होना स्वाभाविक है। समाज और विश्व में जो कुछ घटता है, उससे मानव समुदाय का प्रभावित होना अनिवार्य है। पश्चिमी पुनर्जागरण हो या भारतीय, मानव समाज उससे अछूता नहीं रहा। औद्योगिकीकरण की वैश्विक प्रक्रिया से भारत भी प्रभावित हुआ। 20वीं शताब्दी में दो विश्वयुद्धों के बाद हुए राजनीतिक परिवर्तनों और स्वाधीनता के आंदोलनों से भारत अछूता नहीं रहा तथा स्वाधीनता के लम्बे संग्राम के उपरान्त देश आजाद हुआ। मशीनी क्रांति तथा प्रौद्योगिकी ने पूरे समाज का परिदृश्य बदल दिया। ज्ञान के नए-नए स्रोत और भंडार हमारे सामने आये।

इस सम्पूर्ण परिदृश्य की निर्मिति में आपसी संवाद अथवा सम्प्रेषण ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। अलग-अलग भाषा बोलने और अलग-अलग जीवन शैली जीने वाले लोगों के मध्य आपसी तालमेल और समन्वय स्थापित करने में सबसे प्रमुख तंतु संवाद होता है। संवाद अथवा सम्प्रेषण किसी भी मानव समाज की बुनियादी आवश्यकता है जिसके अभाव में न केवल प्राणी का जीवन दुष्कर है अपितु उसकी मानसिक स्थिति भी विकृष्ट हो जाती है। इस सम्पूर्ण आलोक में सिद्ध होता है कि संभवतः मानव होने की एक अस्मिता सामाजिक होना है जिसके लिए आपसी सरोकारों, विचारों, संवेगों और भावनाओं तथा उपलब्धियों एवं 'एक जैसे चिंतन स्वभाव' का होना भी अनिवार्य कहा गया है। एक जैसे चिंतन स्वभाव के निर्माण हेतु किसी माध्यम की आवश्यकता अनुभव होती है। परन्तु जब अलग-अलग भौगोलिक क्षेत्र हों, संस्कृतियाँ अलग हों और सीमाओं के कारण राष्ट्रों में बनता विश्व हो तो एक भाषा का होना अकल्पनीय है। अंततः प्रश्न उत्पन्न होता है कि फिर संवाद कैसे हो? इसका उत्तर है अनुवाद। यानी दो भाषाओं और संस्कृतियों अथवा भौगोलिक प्रांतों के मध्य एक-दूसरे की बात सुन-समझकर उसका प्रत्युत्तर खोजना, और उससे बुनियादी समझ बनाना। ऐसा प्रारम्भ में संकेतों के माध्यम से होता रहा, फिर भाषा में कुछ साझे तत्वों की खोज हुई और उच्चारण के साथ वस्तुओं अथवा आवश्यकताओं को जोड़ कर देखने के प्रयास मानव समाज ने किये। इससे कुछ-कुछ आदान-प्रदान प्रारंभ होना संभव हुआ होगा जिससे अंततः भाषांतर, रूपांतर, निर्वचन, अनुवचन, अनुवाद अथवा अनुवाद, अन्वयांतर, कथ्यांतर जैसे संवाद के विविध प्रारूपों की प्रक्रिया संपन्न हुई।

भारत में अनुवाद के अनेक प्रचलित रूपों का उल्लेख भारतीय सहित्य में मिलता है। पूर्व वैदिक काल से लेकर उत्तर वैदिक एवं लौकिक संस्कृत काव्य रचनाओं तक अनुवाद के अनेक रूप भाष्य, अन्वय, टीका, वार्तिक,

* निदेशक, अनुवाद अध्ययन एवं प्रशिक्षण विद्यापीठ, इग्नू

व्याख्या, छाया आदि के रूप में मिलते हैं। मध्य काल में धार्मिक और आस्था के साहित्य के प्रचार-प्रसार के लिए भी अनेक प्रकार के माध्यम अपनाये गए। इनमें गेयता का पुट प्रमुख होने से इनकी गीतात्मक शैली का निर्माण हुआ जो मानव समुदाय के लिए सहजता से ग्रहण करने योग्य होती है। इस गायन शैली के अनेक क्षेत्रीय रूपांतर प्रयोग में दिखाई देते रहें हैं। मुगल काल में अनुवाद के लिए व्यवस्थागत प्रयास हुए। अंग्रेजी हुकूमत के समय स्वाधीनता संग्राम एवं नवजागरण काल के दौर में साहित्यकारों ने अपने स्तर पर अनुवाद किये ताकि राष्ट्रीयतावाद के विचार को गति दी जा सके और समाज में जागृति उत्पन्न की जा सके। सूचना प्रौद्योगिकी और ज्ञान के प्रसार के कारण 20वीं शताब्दी को सूचना और संचार प्रधान शताब्दी के नाम से जाना गया उसी प्रकार 21वीं शताब्दी को उस सूचना एवं ज्ञान के भण्डार को सार्वजनिक करने के उद्देश्य से अनुवाद की शताब्दी के रूप में देखा जा रहा है। इसका एक और प्रमुख कारण है वर्तमान समाज और विकास का चरण ज्ञान विज्ञान से प्रभावित है। वैश्वीकरण की प्रक्रिया से सम्पूर्ण विश्व एक ग्राम में परिवर्तित हो गया है। दूरियों और सीमाओं का अतिक्रमण हो रहा है। स्थान और काल की परिभाषाएं बदल रही हैं। अनुवाद सूचना और ज्ञान के नए विस्तार उपलब्ध करा रहा है। प्रो. कृष्ण कुमार गोस्वामी के अनुसार 'भाषायी सीमाओं को लांघते हुए हम यह अनुभव करते हैं कि अपनी भाषा से किसी भाषा का ज्ञान होने का अर्थ है तीसरी आँख या तीसरे कान का होना। यह तीसरी आँख या कान की उपलब्धि अनुवाद से ही संभव है, जो हमें अन्य भाषाओं में ज्ञान विज्ञान के क्षेत्र में हो रहे कार्यों का परिचय देता है।

अनुवाद ने सदैव विचारों के अजस्र स्रोत और उनसे प्रचार-प्रसार में अपना योगदान दिया है। स्वाधीनता संग्राम से लेकर पश्चिमी विचारकों तक भारतीय मेधा का परिचय तथा वैदिक और लौकिक कालजयी साहित्य का आदान-प्रदान अनुवाद से ही संभव हुआ है। भारतीय चिंतन पर पश्चिमी राजनीतिक और सामाजिक प्रभाव स्पष्ट देखे जा सकते हैं जिसका एक बड़ा कारण अनुवाद रहा है। दुर्लभ बंधु, विश्व प्रपंच, शिक्षा, स्वाधीनता, बुद्ध चरित और मधुशाला जैसी कृतियां भारतीय साहित्य में

जुड़ी। वहीं रामायण, महाभारत, गीता, मनुस्मृति, पंचतंत्र, काव्यशास्त्रीय परंपरा के ग्रंथों के विदेशी भाषाओं में बड़ी संख्या में अनुवाद हुए। वेदों, उपनिषदों तथा आर्ष साहित्य के अनुवाद मध्य एशिया और यूरोपियाई भाषाओं में पहले ही होने के कारण भारतीय चिंतन-मनन का विश्वव्यापी प्रसार हुआ है। अनुवाद इस दृष्टि से विचारों के उद्गम से लेकर उनके प्रसारण में महती भूमिका निभाता रहा है। विश्व साहित्य के निर्माण में उसकी सुविधित भूमिका है। ज्ञान साहित्य में अभूतपूर्व विस्तार और उसके भारतीय भाषाओं में अनुवाद को लेकर भारत में विगत तीन दशकों से गंभीर प्रयास हो रहे हैं। भाषायी आदान-प्रदान के साथ साथ सांस्कृतिक सेतु भी निर्मित होते हैं जिससे एक सामासिक संस्कृति का निर्माण वर्तमान विश्व में हो रहा है। राष्ट्रीय ज्ञान आयोग की स्थापना और तदुपरांत राष्ट्रीय अनुवाद मिशन की स्थापना यह सिद्ध करती है कि भारत में ज्ञान साहित्य को अनूदित कर उसे सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं में उपलब्ध कराना सरकारी व सामाजिक दायित्व है। इस दृष्टि से 21वीं शताब्दी में अनुवाद संबंधी क्रियाकलाप एक व्यापक स्तर पर कार्यरत हैं।

विश्व-ग्राम की अवधारणा को चरितार्थ करने में जहाँ आर्थिक जगत की प्रमुख भूमिका है वहीं उसकी निर्मिति में भाषायी सामंजस्य स्थापना में अनुवाद की केंद्रीय भूमिका है। बहुराष्ट्रीय कंपनियों के वैश्विक प्रसारण में अनुवाद ही उन्हें संबंधित राष्ट्रों से जोड़ता है, उनकी भाषा, बोली और काम-काज में साहित्य का आदान-प्रदान अनुवाद के माध्यम से ही होता है। वैश्विक स्तर पर आर्थिक हित साधन में अनुवाद की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है। समुन्नत तकनीक और सिद्धांतों को स्थानीय जनता और बाजार से जोड़ने में संश्लेषक की भूमिका अनुवाद बहुपक्षीय स्तरों पर निभाता है। सुप्रसिद्ध अनुवाद विदुषी सुसेन बेसनेट के अनुसार '21वीं शताब्दी अनुवाद की शताब्दी कई कारणों से है, इसमें मानवीय गतिमयता अब काल और स्थान का अतिक्रम करती अति त्वरित हो गई है जो किसी स्थान विशेष से प्रारंभ होकर भौगोलिक सीमाओं का अतिक्रमण करती है। यह प्रक्रिया निरपेक्ष अथवा राजनीतिक प्रभाव से अचेत नहीं है और स्पष्ट रूप से इसमें भाषाओं के मध्य टकराहट देखी जा

सकती है इसमें दूसरी संस्कृतियाँ और आस्थाएं भी सम्मिलित हैं। इस प्रकार 21वीं शताब्दी एक महती अनुवाद सम्बन्धी घटनाक्रम की शताब्दी है।

अनुवाद की महत्ता का उल्लेख करते हुए भारतीय अनुवाद चिन्तक अप्पादुरई ने इसे एक 'नई नृजातीय व्यवस्था' (ethnoscape) की संज्ञा दी है। मानवीय उत्प्रवासन, शरणार्थियों के आप्रवासन, पर्यटन, देश निकाला, और अन्य कई कारणों से सीमाओं का पार-प्रवासन एक नए विश्व का निर्माण कर रहा है जिससे राष्ट्रों के मध्य अभूतपूर्व स्तर पर नए समीकरण स्थापित हो रहे हैं। विश्व भर में तीव्र गति से जनसंख्या वृद्धि हो रही है उसी स्तर से भाषायी संकट भी गहराता जा रहा है। कुछ भाषाएँ लगातार वर्चस्व हासिल कर रहीं हैं जबकि कुछ सामाजिक, राजनीतिक और आर्थिक तथा जन-उपेक्षा के कारण लगातार ह्रास की ओर उन्मुख हैं। मिली-जुली भाषायी संस्कृति (hybrid langscape) भी विकसित हो रही है। पिजिन के नए-नए रूप बन रहे हैं। 21वीं शताब्दी में भाषाओं के धीरे-धीरे लुप्त होने के परिणामस्वरूप अनेक संस्कृतियों का भी ह्रास हो रहा है क्योंकि भाषाएँ निश्चित रूप से सांस्कृतिक बहुलता, सामाजिक चिंतन, रीति-रिवाजों और चिर संचित अनुभवों के आधार पर निर्मित परम्पराओं को अभिव्यंजित करती हैं। भाषाओं के अभाव में वे स्वतः ही क्षीण होकर लुप्त हो जायेंगी। माइकल क्रोनिन के अनुसार 'विश्व में बहुलता का स्पष्ट उदाहरण भाषायी विविधता है, विश्व में एकल भाषा साम्राज्य के कारण सहज-बोध की संभावना क्षीण हो रही है।' स्वाभाविक है वर्तमान परिदृश्य में भाषाओं को संरक्षित और संवर्धित करने की सर्वाधिक तात्कालिक जरूरत है क्योंकि बाजार आधारित व्यवस्था (सामाजिक और राजनीतिक) वर्चस्व वाली भाषा की हो पोषक हो सकती है।

भारतीय भाषाओं के संरक्षण निष्ठित गणेश देवी ने अनुवाद की बहुमुखी भूमिकाओं का बखूबी उल्लेख किया है। मध्य काल में जहाँ इसने मुक्ति का मार्ग प्रशस्त किया वहीं स्वाधीनता संग्राम में इसने संचार के माध्यम के रूप में काम किया। इसने विभिन्न समुदायों और क्षेत्रों को आपस में एक किया। इसने पुनर्जागरण की

संकल्पना को ठोस धरातल देकर उसकी लिए व्यापक सामाजिक एवं बौद्धिक संकल्पना विकसित की। आज उसकी भूमिका निश्चित रूप से भारतीय भाषाओं को आगे लाने और उनमें उपलब्ध साहित्य संस्कृति को संरक्षित करने की है।

आज सूचना-संचार विकास और प्रौद्योगिकी अनुप्रयोगों के परिणामस्वरूप अनुवाद एक व्यापक जन समूह का सहभागी प्रयास बन चुका है। इसे कुछ-कुछ 'व्यापक मुक्त अनुवाद' गतिविधि की संज्ञा दी जा सकती है। समकालीन अनुवाद पर कंप्यूटर साधित उपकरण और मशीनी अनुवाद जैसी अत्याधुनिक प्रौद्योगिकियों के विकास का महत्वपूर्ण प्रभाव परिलक्षित होता है। वर्तमान शताब्दी में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका के परिप्रेक्ष्य में अनुवादकों द्वारा संपन्न किये जाने वाले उन बहुमुखी दायित्वों की अनुपालना भी एक प्रमुख मुद्दा है जो वे भाषायी दक्षता से लेकर सम्प्रेषण साक्षरता के कारणों के रूप में करते हैं। इस दिशा में प्रौद्योगिकी सुप्रशिक्षित उन अनुवादकों की भूमिका केंद्रीय हो जाती है जो स्वैच्छिक रूप से समाचारों के निर्माण और आदान-प्रदान में सक्रिय होते हैं। अनुवाद की भूमिका समकालीन परिस्थितियों में इसलिए भी अहम है कि इससे विभिन्न संस्कृतियों के मध्य समावेशन को प्रश्रय मिलता है और उनमें एक प्रकार का कनेक्ट स्थापित होता है जिससे 'अन्य' की भावना दूर होती है। वूल्फ के अनुसार रूपान्तरणीय शोध (translational research) को वास्तविक जीवन से जोड़ने की प्रक्रिया में अनुवाद की भूमिका को देखा जा सकता है जिसके कारण स्वास्थ्य विज्ञान में अनेक नई प्रणालियों का विकास हुआ है तथा 'बेंच से बेड' तक (bench to bed) की संकल्पना को साकार करने में मदद मिली है। अपने सुदीर्घ अनुवाद लेख में प्रख्यात अनुवादशास्त्री अवधेश कुमार सिंह ने वर्तमान शताब्दी को ज्ञान शताब्दी के साथ-साथ अनुवाद की शताब्दी बताते हुए इस बात पर गंभीरता से ध्यान देने का आह्वान किया है कि 19वीं शताब्दी के औपनिवेशीकरण तथा 20वीं शताब्दी के औद्योगीकरण एवं उत्तर-आधुनिकीकरण के उपरांत 21वीं शताब्दी में विज्ञान एवं टेक्नोलॉजी के अभूतपूर्व विकास से सूचना एवं ज्ञान के भंडारों में अप्रतिम वृद्धि हुई है और इसमें अनुवाद ने बड़ी भूमिका निभाई है।

मशीनी अनुवाद के विकास ने भी ज्ञान के सृजन एवं संचरण में अपना योगदान दिया है। इस दृष्टि से इस शताब्दी में मशीनी अनुवाद की संभावनाओं को भी अधिक सघनता से प्रयोग में लाने की आवश्यकता है। वे आगे अनुवाद की प्रविधि, प्रक्रिया तथा मूल पाठ एवं स्रोत पाठ पर भी कई महत्वपूर्ण सवाल खड़े करते हैं तथा अनेक भ्रांतियों का निराकरण करते हुए इन सब पर वर्तमान भाषा, समाज और संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में पुनः गौर करने के लिए कहते हैं।

इस शताब्दी में अनुवाद और अनुवादकों की नई भूमिका का परिचय देते लारेंस वेनुटी लिखते हैं कि आज अनुवादक और अनुवाद कार्य प्रवंचना का नहीं रहा अपितु उसमें बहु-आयामी परिवर्तन हो चुका है। आज अनुवादक महत्वपूर्ण संसाधन हैं जिनकी सेवाएं इस अत्यंत जटिल वैश्विक परिदृश्य में आपसी संवाद स्थापित करने में एक अपरिहार्य कौशल के रूप में उल्लेखनीय हैं। इस बहुस्तरीय और बहुचरणीय वैश्विक परिदृश्य में अनुवाद एक ऐसा संश्लेषक है जो हमें स्मरण कराता है कि 'इस अत्यंत क्षणभंगुर जैवीय और सांस्कृतिक पारिस्थितिकीय उपग्रह पर अनुवाद का दायित्व आज पहले से कहीं अधिक निर्णायक हो गया है। इस प्रकार 21वीं शताब्दी में वैश्विक भाषिक परिदृश्य में अनुवाद अपेक्षतया अधिक प्रासंगिक हो गया है।

अनुवाद अध्ययन आज तुलनात्मक साहित्य की परिधि से निकलकर एक स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में प्रतिष्ठित हो गया है। जेम्स होल्म्स ने 1972 में अपनी सुप्रसिद्ध रचना 'नेम्स और नेचर ऑफ ट्रांसलेशन' में जिस अनुप्रयुक्त और बाद में वर्णात्मक एवं सैद्धांतिक अनुवाद मैपिंग का उल्लेख किया था वह बाद में अनेक उपशाखाओं में विभक्त होकर आज उत्पाद उन्मुख, प्रक्रिया उन्मुख तथा प्रकार्य उन्मुख रूपों में हमारे सामने अनुवाद अध्ययन एवं प्रक्रिया के रूप में महत्वपूर्ण अनुवाद प्रारूप है। इस अनुवाद अध्ययन की संकल्पना को बाद में सुसेन बेसनेट और आंद्रे लेफ्रे ने और अधिक स्पष्ट रूप से ठोस आधार प्रदान किया। इस प्रकार अनुवाद अध्ययन का दायरा आज विस्तारित होकर स्वतन्त्र अनुशासन के रूप में विकसित हो रहा है जिसमें अनुवाद प्रशिक्षण, गुणवत्ता आकलन और संस्कृति जैसे मुद्दे केंद्रीय हो गए

हैं। स्वतन्त्र अध्ययन शाखा के रूप में अब अनुवाद उन क्षेत्रों में भी शामिल है जिनमें शोध और अनुसंधान से उपजे ज्ञान को प्रयोक्ताओं के हित के साथ जोड़ा जा रहा है। टेक्नोलॉजी और स्वास्थ्य विज्ञान में क्रियान्वयी अथवा स्थानांतरणीय (translational knowledge) ज्ञान को जन कल्याण से समेकन में अनुवाद का यह नया दायित्व महत्वपूर्ण है। सुरेश कुमार अनुवाद कार्य को अनुसंधान प्रवृत्ति का कार्य मानते हैं। उनका विचार है कि अनुवाद गतिविधि में अनेक विषय विशेषज्ञों तथा अलग-अलग राष्ट्रीयता के लोगों की सहभागिता होती है तथा मनोवृत्तियां आपस में संघर्ष करती हैं। इससे नए विषय आयाम प्रकट होते हैं जो अनुसंधान की प्रवृत्ति को बढ़ावा देते हैं। विभिन्न भाषा-भाषी लोग मिलकर विमर्श करते हैं और राष्ट्रों के मध्य सहमतियाँ एवं करार आदि होते हैं। इस प्रकार अनुवाद नए-नए क्षेत्रों और उनसे जुड़ी जानकारियों पर विमर्श करने में सहायक होता है। शोध और अनुसंधान में अनुवाद की यह भूमिका सचमुच नई है। शिक्षा के क्षेत्र में और विशेषकर अंग्रेजी भाषा शिक्षण में तो अनुवाद के अनेक उपयोग पहले से ही व्यापक स्तर पर हो रहे हैं और भाषा शिक्षण तथा कक्षा-अध्यापन को और सशक्त बनाने में इसे एक आवश्यक संसाधन के रूप में स्वीकृत किया गया है।

मानवीय अस्मिता और विकास के लिए जिस प्रकार मातृभाषा में अध्ययन एवं शिक्षण का होना अनिवार्य है, यह वर्तमान शताब्दी में मूलभूत अधिकार के रूप में प्रतिस्थापित हो रहा है। इसमें सभी के लिए ज्ञान साधनों की उपलब्धि भी आवश्यक होगी, ऐसे में अनुवाद की भूमिका सघनता से उभर रही है। स्वाधीनता, लोकतंत्र और प्रजातंत्र जैसी अवधारणाओं के स्थायित्व एवं सतत पुष्टि हेतु भी अनुवाद से उत्तम कोई अन्य विकल्प नहीं है। अनुवाद अध्ययन से व्यापक समझ विकसित करने में जो मदद मिलती है उससे हम अपने स्थानीय, क्षेत्रीय और राष्ट्रीय मुद्दों पर साझी राय कायम करने में सफल हो सकते हैं। इस प्रकार राष्ट्रीय एकता के सेतु के रूप में अनुवाद की भूमिका अधिक संगत प्रतीत होती है।

ज्ञानात्मक साहित्य के आदान-प्रदान एवं सर्वसुलभता के साथ-साथ अनुवाद ने भारतीय भाषाओं में साहित्य के आपसी संवाद को कई मायनों में सशक्त किया है। आज विभिन्न विमर्श क्षेत्र विशेष तक सीमित न रहते

हुए अनुवाद के माध्यम से राष्ट्रीय चर्चा के केंद्र में आ रहे हैं और एक नई सामाजिक चेतना का संचार हो रहा है। इससे जहाँ सामाजिक स्तर पर सुधार हो रहा है वहीं सरकारी अथवा प्रशासनिक सुधार तथा विकास भी बड़े पैमाने पर हुआ है। इस प्रकार अनुवाद को एक सामाजिक चेतना एवं व्यवस्थागत सुधार के कारक के रूप में भी मान्यता मिल रही है। विश्वभर में अनेक आन्दोलनों का सूत्रपात और उनकी सफलता का श्रेय अनुवाद को जाता है। अफ्रीका महाद्वीप में अश्वेत आन्दोलनों में अनुवाद की भूमिका प्रमुख रही है जिसने प्रताड़ित लोगों की दास्तानों को पूरे विश्व की भाषाओं में पहुंचाकर विश्व जनमत को प्रभावित किया और अंततः अनेक देशों को उपनिवेशवाद से स्वतंत्रता मिली। न्यायालय, संसद, विधि एवं प्रशासनिक व्यवस्था में जिस प्रकार के सुधार एवं आधारभूत ढांचे का विकास हो रहा है उससे स्पष्ट है कि अनुवाद और अनुवादकों की सेवाएं बड़ी मात्रा में अपेक्षित हैं। हाल ही में सर्वोच्च न्यायालय ने कुछ बड़े फैसलों में निर्णय लेने से पूर्व कई लाख पृष्ठों के अनुवाद कराकर उसे वादियों और प्रतिवादियों तथा न्यायालय को उपलब्ध कराने के निर्देश दिए थे। राजभाषा के रूप में भारत सरकार के कामकाज में हिंदी के प्रगामी प्रयोग में लगातार वृद्धि हो रही है और इसमें अनुवाद की भूमिका उत्तरोत्तर महत्वपूर्ण होती जा रही है।

वैश्वीकरण और वैश्विक अर्थव्यवस्था में जिस प्रकार अनुवाद की भूमिका महत्वपूर्ण है उसी प्रकार भारत की अर्थव्यवस्था में अनुवाद एक सशक्त संसाधन के रूप में उभरा है। सूचना प्रौद्योगिकी, पर्यटन, स्वास्थ्य सेवाओं, परामर्शी सेवाओं तथा दूसरे अनेक क्षेत्रों में घरेलू एवं विदेशी स्तर पर अनुवाद एवं निर्वचन सेवाओं की भारी मांग बढ़ रही है। इस प्रकार सकल घरेलू उत्पाद में भी अनुवाद की भूमिका अहम है। संरचनावाद, विरचनावाद, उत्तर संरचनावाद, भाषिकता आदि से होता हुआ अनुवाद कर्म सांस्कृतिक मोड़ से निकलकर अनुवादक की दृश्यता आदि प्रश्नों से आगे आज समाज में 'संकट निवारक' के रूप में देखा जा रहा है। प्रश्न केवल मूल निष्ठता अथवा लक्ष्य पाठ के सौन्दर्य तक सीमित नहीं है अपितु अनुवाद की बहुमुखी भूमिका एक सक्रिय एवं प्रभावी संवाद सुगमक के रूप में अधिक तर्कसंगत एवं व्यावहारिक हो गई है।

अनुवाद के उद्देश्य इस प्रकार केवल भाषांतर अथवा पाठांतर या भावान्तर तक सीमित न होकर संस्कृति एवं समाज में सेतु निर्माण की भूमिका में है। सामाजिक सद्भाव, विकास, अर्थ-व्यवस्था तथा वैश्विकता के आयाम इसके साथ जुड़े हुए मुद्दे हैं।

वैश्विकता की निर्मिति में अर्थ एवं इससे सम्बद्ध दूसरी गतिविधियां महत्वपूर्ण कारक हैं। सच तो यह है कि वैश्विकता में बाजार ही केन्द्रीय घटक है। बाजार परस्पर हितों और व्यवस्था से संचालित होता है। आपसी संवाद और अंतःक्रिया में अनुवाद की स्वयंसिद्ध भूमिका है। व्यवस्था हो या उत्पाद तथा उत्पाद का, भंडारण, विपणन, वितरण, सभी स्थितियों में भाषा और उसके विभिन्न प्रयोगात्मक रूपों की आवश्यकता स्वाभाविक है। माल एवं सेवाओं के विपणन में भी जन संपर्क की केन्द्रीय भूमिका है जिसमें अनुवाद एक मध्यस्थ अथवा सुगमक की भूमिका निभाता है। प्रत्येक स्तर और स्थान पर भिन्न-भाषा भाषियों के साथ समन्वय एवं प्रक्रिया प्रवर्तन में अनुवाद अपरिहार्य हो जाता है। स्पष्ट है वर्तमान वैश्विक बाजार हो अथवा उसका कोई घटक, जिसमें मनुष्य अथवा मशीन की भूमिका अपेक्षित हो, अनुवाद की अपेक्षा बनी रहती है। अर्थ एवं बाजार प्रगति तथा विकास की उत्प्रेरक हैं और इन्हें गतिशील बनाने में संवाद की आवश्यकता रहती है जिसकी आपूर्ति अनुवाद करता है। इस प्रकार राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर व्यापार, वाणिज्य, आदान-प्रदान और परस्पर सहयोग में अनुवाद सहकारी है। वर्तमान परिस्थितियों में यह निश्चित रूप से एक अपरिहार्य उपादान के रूप में स्थापित हो गया है।

अनुवाद प्रक्रिया और उत्पाद दोनों हैं। विकासशील समाज में जहाँ नित नए प्रयोग होते हैं वहीं भाषा के ही अनेक आयाम लगातार स्वरूप धारण करते रहते हैं। भाषा व्यवहार और अनुवाद का अंतर्संबंध होने के कारण अनुवाद प्रक्रिया में लगातार नवोन्मेषी और अद्यतन रहने की चुनौती है। बेशक अनुवाद के मूल सिद्धांतों से विचलन की संभावना कम होती है, शब्दानुवाद और भावानुवाद के प्रश्न अभी भी प्रासंगिक हैं तथापि नए पाठ अर्थात् अनूदित पाठ का उत्पाद निर्माण करते समय लक्ष्य भाषा, पाठ और प्रयोक्ता वर्ग के हित तथा भाषायी संस्कृति की उपेक्षा नहीं की जा सकती। यह तथ्य है कि सूचना

प्रौद्योगिकी का अभीष्टतम प्रयोग इस शताब्दी में अनुवाद के क्षेत्र में हो रहा है। ऑन-लाईन संसाधनों के प्रयोग से लेकर सोशल मीडिया तथा त्वरित संचार की गति ने अनुवाद की दिशाएं बदल दी हैं। इसमें गति, त्वरितता और गुणात्मकता के नए आयाम जोड़ दिए हैं। सूचना जगत में अभूतपूर्व प्रगति से काल और स्थान की दूरियां मिट रही हैं तथा भौगोलिक एवं सामाजिक सांस्कृतिक सीमाएं भी अतिक्रमित हो रही हैं। ऐसे परिवेश में अनुवाद में मूल्यनिष्ठता, पठनीयता, सौंदर्य तथा प्रायोगिकता सम्बन्धी अनेक प्रश्न उभर रहे हैं।

21वीं शताब्दी में अनुवाद केवल साहित्यिक अथवा प्रशासन (भारत के सन्दर्भ में राजभाषा के प्रयोग) तक सीमित न रहकर आज यह अर्थ-व्यवस्था, उद्योग, बहु-राष्ट्रीय कंपनियों के कार्यों तथा देशों के मध्य आपसी विवादों के हल में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर

रहा है। भारत के सकल घरेलू उत्पाद में पर्यटन, स्वास्थ्य, खेल एवं संस्कृति आयोजनों और अंतरराष्ट्रीय सहयोग के क्षेत्रों का बड़ा हिस्सा है और इन सब क्षेत्रों में अनुवाद की बहुमुखी भूमिका को पहचाना गया है। आज अनुवाद और अनुवादकों के लिए सहयोगात्मक अनुवाद प्लेटफॉर्म तैयार किये जा रहे हैं ताकि समूह अनुवाद, समुदाय अनुवाद और स्वैच्छिक अनुवाद को बढ़ावा देकर अनुवाद संसाधनों को और पुष्ट किया जा सके। मशीनी अनुवाद की संभावनाओं को भी गंभीरता से व्यवहार में लाने के प्रयास हो रहे हैं। अनुवाद स्मृति तथा कृत्रिम बुद्धि (Translation Memory) (TM) and (Artificial Intelligence) (AI) भविष्य में मशीनी अनुवाद के क्षेत्र में महत्वपूर्ण सिद्ध होंगे। अनुवाद सचमुच मूल पाठ को उसके भाषायी और सांस्कृतिक (सामाजिक एवं भावनात्मक) बंधन से मुक्त कर उसके उत्तर जीवन की अवधारणा को साकार कर रहा है।



एक भिखारी की कहानी.....

सागरिका दत्ता*

सुनाती हूँ आज आपको
एक भिखारी की कहानी
रुकता ट्रेफिक सिग्नल में
फैलाता हाथ, थामे झोली।

लंगड़ाता, लिए आँखों में नमी
कहता, बाबू-माई दे दे इस भिखारी को
दो चार सिक्के, न देना नोट
पता नहीं फिर कब हो जाए नोटबन्दी।

आई हंसी, फिर सोचा
ठीक ही तो कहता यह बेचारा
नोटबन्दी होने पर भी,
उसको क्या पड़ेगा फर्क
मिलने तो वाला है सिर्फ सिक्का
एक, दो, पाँच या दस का

फर्क तो पड़ेगा मध्यम और उच्च वर्ग को
व्यस्त कोई नोट छुपाने में,
तो कोई ए.टी.एम में लाईन लगाने को

पर उसने व्यंग्य कसा, मारा तमाचा उन लोगों के मुँह पर
जो करते आ रहे भ्रष्टाचार, मार रहे लात गरीबों के पेट पर
इस अभागे भिखारी को नोटबन्दी की क्या चिंता
उसे तो बस करना है जुगाड़, आज के खाने का।

शायद वह भी किसी कोने में बैठ सोचता.....

आज उनसे तो मेरी ही दशा अच्छी
गर होते करोड़ों नोट मेरे पास भी
न आती नींद, न होती कभी शांति



*हिंदी अनुवादक, क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी

विश्व खाद्य दिवस

एस. के. दुबे*

विश्व में दिन-प्रतिदिन बढ़ती हुई आबादी के पोषण के लिए पर्याप्त खाद्यान्न का होना अति आवश्यक है। वर्तमान में प्राकृतिक एवं मानवीय कारकों से समस्त विश्व में पर्यावरण में असंतुलन होने के कारण कृषि की उत्पादकता में उतनी बढ़ोत्तरी नहीं हो रही है जिससे विश्व की आबादी के लिए खाद्यान्न की पूर्ति पूर्ण रूप से हो सके। इसी कारण पूरे विश्व में गरीबी, भुखमरी, कुपोषण एवं पर्याप्त भोजन उपलब्ध न होने की स्थिति बढ़ रही है। यह एक चिंता का विषय है। अतः खाद्यान्न की समस्या पर चिंतन करने के लिए संयुक्त राष्ट्र संघ के तत्वावधान में 16 अक्टूबर, 1980 को रोम में "खाद्यान्न एवं कृषि संगठन" की स्थापना की गई एवं विश्व में 1980 से 16 अक्टूबर को "विश्व खाद्य दिवस" के रूप में घोषित किया गया। इसका मुख्य उद्देश्य समस्त विश्व से गरीबी, भुखमरी, कुपोषण को दूर करने के उपायों को खोजना, अमल करना, अत्याधुनिक एवं वैज्ञानिक तरीके से कृषि पैदावार बढ़ाना, कृषि उत्पादों का उचित संग्रह, वितरण एवं कीमतों को स्थिर रखने के भरसक प्रयास करना है। संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा कई विकासशील देशों में योजनाएं चलाई जा रही हैं। इसके अलावा अन्य पिछड़े देश जहाँ अत्यधिक समस्या है, मुख्यतः अफ्रीका महाद्वीप, युगांडा, बरदी, नाइजीरिया, सेनेगल, सोमालिया, इरीट्रिया पर विशेष ध्यान दिया जा रहा है।

किसान कई पीढ़ियों से खेती के लिए बरसात पर ही निर्भर है। विश्व में फसल उत्पादन में उतार-चढ़ाव का मुख्य कारण कम या अत्यधिक वर्षा, अत्यधिक नमी, वर्षा की मात्रा व तरीकों में परिवर्तन, फसलों में कीड़ों का प्रकोप, औसत तापमान का बढ़ना, वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड एवं अन्य जहरीली गैसों का बढ़ना, ओजोन गैस की पर्त में कमी होना है। संयुक्त राष्ट्र पर्यावरण कार्यक्रम की विज्ञप्ति के अनुसार लगभग 5.7 लाख टन कार्बन डाईऑक्साइड गैस वायुमंडल में घुलकर वायुमंडल को जहरीला बना रही है। भारत

में जहाँ ज्यादातर कृषि बरसात पर निर्भर एवं छोटे किसानों द्वारा की जाती है। इन किसानों को सरकार द्वारा चलायी जा रही नयी स्कीमों की जानकारी देकर, उन्नत किस्म के बीजों का उपयोग कराकर दालों, सोयाबीन, फल एवं सब्जियों का उत्पादन बढ़ाया जा सकता है। पौष्टिक दालों में प्रोटीन की अत्यधिक मात्रा होती है। कृषि के साथ सहायक धंधे जैसे पशुपालन, मुर्गी पालन, मत्स्य पालन, मधुमक्खी पालन, दुग्ध उत्पादन द्वारा भी खाद्यान्न समस्या का निराकरण किया जा सकता है। वर्ष 2013-14 के आंकड़े बताते हैं कि कृषि क्षेत्र में 4.7% बढ़ोत्तरी पायी गयी। कुल खाद्यान्न 264.4 मिलियन टन का उत्पादन किया गया। इनमें 32.4 मिलियन टन तिलहन, 19.6 मिलियन दालें, 73.17 मिलियन टन मूंगफली का रिकॉर्ड उत्पादन हुआ। इसी वर्ष खाद्यान्न की कुल उपलब्धता बढ़कर 186.4 कि.ग्रा. प्रति व्यक्ति हो गयी। खाद्यान्नों का अधिक उत्पादन बढ़ाने के लिए पर्यावरण, जलवायु, वैज्ञानिक पद्धति से कृषि, जल संरक्षण, भू-संरक्षण, कीटनाशकों के प्रयोग, उर्वरकों का प्रयोग, सिंचाई की व्यवस्था, उत्तम प्रकार के बीजों की उपलब्धता सुनिश्चित कराना आदि पर भी विशेष जोर दिया जा रहा है जिससे खाद्यान्नों की उपलब्धता में आत्मनिर्भरता आ सके।

अमर उजाला एवं ब्लॉग स्पॉट-कॉम के सौजन्य से कुछ चौंकाने वाले आंकड़े प्रस्तुत हैं जिनसे वास्तविक स्थिति प्रकट होती है। विश्व खाद्य दिवस के अवसर पर ग्लोबल हंगर इंडेक्स रिपोर्ट एवं अंतरराष्ट्रीय खाद्य शोध संस्थान में कहा गया कि 84 देशों के सर्वेक्षण में भारत का 63 वां क्रम था जबकि चीन का 6वां, श्रीलंका 43वां, पाकिस्तान 57वां, बांग्लादेश 58वां क्रम पर था। ताजा सूचकांक के अनुसार 5 साल में कम उम्र के 40% से अधिक बच्चों का वजन सामान्य से कम पाया गया जबकि संयुक्त राष्ट्र की खाद्य रिपोर्ट के मुताबिक हर साल 1.3 बिलियन (करीब 1300 करोड़ किंगटल) खाना

* अधीक्षक (तकनीकी), क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

जो कि विश्व भर में होने वाले अन्न उत्पादन का एक तिहाई भाग है, विभिन्न कारणों से नष्ट हो जाता है। एशियाई देशों में जैसे चीन, जापान, दक्षिण कोरिया में हर साल प्रति व्यक्ति करीब 100 कि.ग्रा. सब्जी, 80 कि. ग्रा. चावल बर्बाद हो जाता है। भारत में भी एक अनुमान के मुताबिक 2004-05 में 9918 करोड़, 2005-06 में 10330 करोड़ एवं 2006-07 में 11336 करोड़ यानि इन तीन सालों में 31500 करोड़ रुपये के मूल्य का गेहूँ, चावल राशन डीलर, नौकरशाह एवं सियासी नेताओं के द्वारा आपस में चट कर लिया गया और गरीब जनता मुंह ताकती रह गयी। केग रिपोर्ट, 2012 के अनुसार बिहार में लगभग हर बच्चा, ओडिशा, दिल्ली, आंध्र प्रदेश में हर दूसरा बच्चा, राजस्थान, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, झारखंड में हर पांच में से एक बच्चा, कर्नाटक, गुजरात, केरल, पश्चिम बंगाल, त्रिपुरा, पंजाब, तमिलनाडु में हर तीसरा बच्चा कुपोषित है।

अक्सर देखा जाता है कि शादियों, जन्मदिन, धार्मिक आयोजनों, राजनीतिक कार्यक्रमों, विभिन्न पार्टियों में भोजन काफी मात्रा में बच जाता है। यदि उक्त कार्यों

के पश्चात इनमें बचे हुए भोजन को गरीबों में बाँट दिया जाए तो कई परिवारों को खाना प्राप्त हो सकता है। पूरे विश्व में परमाणु एवं सामरिक हथियारों की होड़ हो रही है अगर समस्त विश्व खाद्यान्नों के उत्पादन में भी प्रतियोगिता करे तो किसी भी आदमी को गरीबी, भुखमरी, कुपोषण का शिकार नहीं होना पड़े।

खाद्यान्नों की समस्याओं को सुलझाने में सहयोग करने के लिए केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा भी असीम प्रयास किए जा रहे हैं। इसके लिए निगम की ओर से वैज्ञानिक पद्धति से खाद्यान्नों को संग्रह, फलों एवं सब्जियों के संग्रह के लिए कोल्ड स्टोर की व्यवस्था, लम्बी अवधि के लिए भी संग्रह, किसानों को खाद्यान्नों की उचित कीमत दिलाने के लिए संग्रह एवं ऋण की व्यवस्था करना, गाँवों में तकनीकी स्टाफ द्वारा वेअरहाउसों में संग्रह आदि का मार्गदर्शन/प्रशिक्षण की सुविधाएं प्रदान करायी जा रही हैं जिससे देश में किसी भी प्रकार से बेवजह अनाज की बरबादी न हो क्योंकि अनाज को बचाना भी उत्पादन करने के समान है।



भारतीय-संस्कृति

सच्चिदानंद राय*

संस्कार की संस्कृति है।
भारत की यह प्रवृत्ति है।।

मानव सेवा श्रेष्ठ है सेवा।
कर-कर-जन पावै मेवा।।

मानवता की पूंजी संस्कृति।
भारत में मिलती ही रहती।।

भेद-भाव नहीं मानवता में।
प्रेम भरा है जीव-जगत में।।

कैसे?कब आई? साम्प्रदायिकता।
इसका कहीं न
ठिकाना पता ।।

भारत एक महाद्वीप है,
मानवता सिखलाने का।

धरती पर बस यही भूमि है,
प्रेम-सुधा बरसाने का।।



* अधीक्षक, क्षेत्रीय कार्यालय, मुम्बई।

महात्मा गौतम बुद्ध और उनका अमर संदेश

डॉ. मीना राजपूत*



सत्य और अहिंसा का मार्ग दिखाने वाले आध्यात्मिक विभूतियों में अग्रणी महात्मा गौतम बुद्ध प्राचीनतम धर्मों में से एक बौद्ध धर्म के संस्थापक हैं। भारत और विश्व की पवित्रतम, विशुद्धतम और उदात्तम विभूति महात्मा गौतम बुद्ध का जन्म 563 ईसा पूर्व इक्ष्वाकु वंशीय क्षत्रिय शाक्य कुल के कपिलवस्तु के राजा शुद्धोदन के घर में हुआ था। महात्मा बुद्ध का जन्म यद्यपि भारत में हुआ, पर वे सम्पूर्ण विश्व की एक महान व गौरवपूर्ण विभूति हैं। गौतम बुद्ध का जन्म, ज्ञान और महापरिनिर्वाण, ये तीनों एक ही दिन अर्थात् वैशाख पूर्णिमा के दिन ही हुए।

कहा जाता है कि महात्मा गौतम बुद्ध के जन्म से पहले इनकी माता महारानी महामाया को शुभ स्वप्न दिखाई देते थे। एक बार स्वप्न में महारानी ने देखा कि वे हिमालय शिखर पर पहुँच गई हैं और ऐरावत अपनी सूँड में शतदल कमल लिए उनकी परिक्रमा कर रहा है। राज ज्योतिषियों ने कहा कि यह बहुत मंगल सूचक स्वप्न है। उसी दौरान महारानी की इच्छानुसार राजा शुद्धोदन ने उन्हें उनके पिता के पास भेजने की व्यवस्था की। इसी यात्रा में भारत-नेपाल की सीमा पर विद्यमान लुम्बिनी वन में महारानी ने पुत्र को जन्म दिया। पुत्र जन्म के कुछ दिनों बाद ही महारानी का स्वर्गवास हो गया। उनकी माता की छोटी बहन महाप्रजापती गौतमी ने बालक का पालन-पोषण किया, जिसे राजा शुद्धोदन ने पत्नी के रूप में स्वीकार किया। गौतम बुद्ध के जन्म से राजा शुद्धोदन की संतान प्राप्ति की कामना पूरी हुई थी, इसलिए इसका नाम 'सिद्धार्थ' अर्थात् सभी मनोकामनाओं को पूर्ण करने वाला रखा गया। इनका गोत्र गौतम था, इसलिए आगे चलकर कुलगोत्र के अनुसार इन्हें 'गौतम'

कहा गया तथा विशेष ज्ञान प्राप्त करने के बाद ये 'बुद्ध' नाम से प्रसिद्ध हुए।

सिद्धार्थ की जन्मपत्नी देखकर ज्योतिषियों ने भविष्यवाणी करते हुए कहा था 'महाराज यह आपका महान सौभाग्य है कि आपके कुल में ऐसा पुत्र उत्पन्न हुआ। यह कुमार बत्तीस महापुरुषीय लक्षणों से युक्त है। यदि यह गृहस्थाश्रम में रहे तो धार्मिक राजा, समुद्रों से घिरी पृथ्वी का स्वामी, चक्रवर्ती राजा होगा, यदि यह प्रव्रज्या लेगा तो यह संसार का महान सम्यक्-सुबुद्ध होगा। पुरोहित ने इनके पिता से कहा था कि इनको कभी रोग, मृत्यु तथा बुढ़ापे का दृश्य नहीं दिखाया जाए, वरना इनको वैराग्य आ जाएगा और जिस दिन ये किसी सन्यासी के दर्शन कर लेंगे, उस दिन गृहस्थ को त्यागकर सन्यासी बन जाएंगे। महर्षि असित ने यह भविष्यवाणी की कि – 'यह बालक बुद्ध होगा।' यह शाक्य कुलभूषण बनेगा। यह बालक विषयों से रिक्त होकर, राज्य को त्यागकर अपने तप से तत्व ज्ञान प्राप्त करेगा। संसार के भटके लोगों को मोक्ष का सीधा मार्ग दिखाएगा। जीवन का वास्तविक उद्देश्य बताएगा। सर्वसंग परित्यागी विरागी महापुरुष के रूप में ख्याति प्राप्त करेगा।

महर्षि असित की भविष्यवाणी से महाराज शुद्धोदन बेहद चिंतित हुए। वे नहीं चाहते थे कि उनके पुत्र के मन में वैराग्य भाव पैदा हो और वह राज्य को त्यागकर वन में तप करने चला जाए। इसलिए उन्होंने राजकुमार सिद्धार्थ के भोग-विलास की सारी सुविधाओं का प्रबंध राजमहल में कर दिया, जिससे कि उन्हें संसार के दुःखों का अंशमात्र भी आभास न हो। महाराज ने उनको महल से बाहर कभी निकलने ही नहीं दिया। सिद्धार्थ को सुख-सुविधाओं और विषय वासनाओं में लिप्त करने के प्रति वे सदैव प्रयत्नशील रहे, परन्तु राजवंश की सब सुख-सुविधाएँ होते हुए भी उनमें उन्हें अनुराग न था। संसार के दुखों को देखकर उनसे मुक्ति की भावना उनमें विद्यार्थी जीवन में ही अंकुरित हो गई थी। बचपन से ही वे शान्त और गंभीर स्वभाव के थे। धीरे-धीरे संसार के प्रति उनकी यह विरक्ति बढ़ती गई। उनकी गंभीरता और उदासीनता दूर करने के लिए सिद्धार्थ के 16 वर्ष का होते ही उनके पिता ने एक अत्यन्त सुंदर राजकुमारी यशोधरा

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), क्षेत्रीय कार्यालय मुम्बई

से उनका विवाह कर दिया, ताकि वे घर-गृहस्थी के बंधन और बीवी-बच्चों के मोह में बंधकर साधु-संन्यासी बनने का ख्याल भी मन में न ला सकें। 28 वर्ष की आयु में एक पुत्र राहुल के पिता बने सिद्धार्थ की गंभीरता और उदासीनता को राजसी ठाठ-बाट, सुंदर पत्नी का प्रेम एवं हृदयांश राहुल का वात्सल्य भी दूर न कर सका।

एक दिन सिद्धार्थ ने अपने सारथी से जिद की कि वह उन्हें नगर-भ्रमण के लिए ले जाए। यद्यपि सारथी को सिद्धार्थ को सार्वजनिक स्थान पर घुमाने की आज्ञा नहीं थी, तथापि राजकुमार के आग्रह को वह टाल न सका। उनका यह नगर-भ्रमण उनके जीवन की तीनों अलौकिक घटनाओं के घटने का कारण बना। नगर-भ्रमण के दौरान उन्होंने मार्ग में एक ओर जहाँ एक वृद्ध, एक रोगी और एक शव देखा वहीं दूसरी ओर एक प्रसन्न साधु का भव्य चेहरा भी देखा। जब सारथी से उन्होंने इन सबका अर्थ पूछा तो सारथी ने उन्हें बताया कि एक दिन हर व्यक्ति की मृत्यु होगी, रोग और बुढ़ापा भी जीवन में अवश्य आता है तथा दुःखों से मुक्ति प्राप्त करने एवं परम सुख या मोक्ष की प्राप्ति के लिए लोग संन्यासी बनते हैं। रोगी की रोग से बेचैनी, बूढ़े की कार्य करने में असमर्थता व क्लान्त शरीर को देखकर तथा 'मृत्यु अनिवार्य है' वह जानने के बाद उनके एकान्त चिंतन के स्वरूप का उन्हें यथार्थ ज्ञान प्राप्त हुआ। सारे संसारी पुरुष संसार के दुःखों के भार के नीचे पिसे जा रहे हैं। इन सारे दुःखी प्रणियों को इस स्थिति से मुक्त करके उन्हें सुखी कैसे बनाया जाए? यही प्रश्न सिद्धार्थ को बेचैन करता रहता। इससे उनके हृदय में वैराग्य की भावना प्रबलतर हो गई। उनका मन घर-गृहस्थी से हटकर आत्मचिंतन में लीन हो गया। माता-पिता के द्वारा डाला गया विवाह बंधन और रूपसी पत्नी का मोह भी वैराग्य की प्रदीप्त भावना को शान्त नहीं कर सका।

अन्त में इसी बेचैनी के परिणामस्वरूप संसार के दुःखों पर विजय पाकर लोगों को सुख प्राप्ति करा देने की कठिन साधना करने के उद्देश्य से उन्होंने एक मध्यरात्रि अपनी पत्नी यशोधरा तथा इकलौते बेटे राहुल को निद्रितावस्था में छोड़कर गृह त्याग किया। उन्होंने कठिन तपस्या आरम्भ की जो निरन्तर कई वर्षों तक चली।

एकमात्र संतान होने के कारण राजा शुद्धोदन ने उनको सांसारिक कर्मों की ओर मोड़ने की अथक कोशिश की। फिर भी, एक रात जब महल के सभी लोग सो रहे थे, सिद्धार्थ अपनी पत्नी वे बेटे को सोता हुआ छोड़, चुपचाप घर से चले गए। सांसारिक बंधनों में बांधने वाले

राज्य, सम्पत्ति और पुत्र का उन्होंने त्याग कर दिया। वृद्ध अवस्था, बीमारी और मृत्यु के कारण का पता लगाना व सत्य की खोज करना उन्होंने अपने जीवन का लक्ष्य बना लिया। इन तीनों प्रश्नों का हल ढूँढने के लिए वे भयानक जंगलों की खाक छानते और कठिन तपस्या करते हुए अन्त में 'गया' में निरंजना नदी के तट पर एक पीपल के वृक्ष के नीचे प्रशान्त वातावरण में समाधि लगाकर बैठ गए। सिद्धार्थ की तपस्या में विघ्न डालने के लिए अनेक प्रयत्न हुए, परन्तु सिद्धार्थ ने अपनी प्रखर साधना अखण्ड रूप में जारी रखी। 29 वर्ष की आयु में गृह त्यागने के बाद 7 वर्ष के दीर्घ काल की कठिन तपस्या व घोर साधना के पश्चात 35 वर्ष की आयु में इन्हें सत्य के दर्शन और आत्म-साक्षात्कार हुआ, जीवन-मरण के रहस्यों का 'बोधि' या ज्ञान प्राप्त हुआ और वे 'बुद्ध' कहलाने लगे। वह वृक्ष 'बोद्धि वृक्ष' के नाम से प्रसिद्ध हुआ। गया शहर 'बुद्ध गया' के नाम से विख्यात हुआ। यहाँ से वे सर्वप्रथम काशी के समीप सारनाथ पहुँचे। वहाँ से उन्होंने अपने मत का प्रचार आरंभ किया। उसके बाद उन्होंने संपूर्ण भारत का भ्रमण किया। 35 वर्ष की आयु से 80 वर्ष की आयु तक पूरे 45 वर्ष का उनका शेष जीवन लोक कल्याण में ही बीता। अपने वचन और कर्म से उन्होंने संसार में सद्भावनाओं का संचार किया।

गौतम बुद्ध ने जीवन का सूक्ष्म विश्लेषण किया। उन्होंने जीवन की समस्या के उत्तर, शास्त्र में नहीं बल्कि विश्लेषण की प्रक्रिया से दिए। उन्होंने कहा कि किसी बात को इसलिए मत मानो कि ऐसा सदियों से होता आया है या परम्परा है। इसलिए भी मत मानो कि किसी धर्मशास्त्र में ऐसा लिखा हुआ है या ज्यादातर लोग इसे मानते हैं। किसी धर्मगुरु, आचार्य, साधु-संत, ज्योतिषी की बात आँख मूँद कर मत मानना। किसी बात को इसलिए भी मत मानना कि वह तुमसे कोई बड़ा या आदरणीय व्यक्ति कह रहा है बल्कि हर बात को पहले तर्क, विवेक, बुद्धि व चिंतन की कसौटी पर तोलना, कसना, जीवन में करके देखना और यदि वह बात स्वयं के लिए, समाज व सम्पूर्ण मानव जगत के हित में लगे तो ही मानना, वरना उसे छोड़ देना। बुद्ध ने कहा सुख हो या दुःख, हानि हो या लाभ, संयोग हो या वियोग, जन्म हो या मृत्यु, मान हो या अपमान, कारण तुम हो। कारण कोई दूसरा नहीं है। कारण अपने भीतर खोजना।

दुनिया के सारे धर्मों ने श्रद्धा को प्राथमिक माना, जबकि बुद्ध ने कहा, अनुभव प्राथमिक है, श्रद्धा अनुसांगिक है। अनुभव होगा तो श्रद्धा होगी। अनुभव होगा तो आस्था

होगी। बुद्ध के अनुसार आस्था की कोई जरूरत नहीं है। अनुभव के साथ वह अपने आप आ जाएगी, तुम्हें लानी नहीं है और तुम्हारी लायी हुई आस्था का मूल्य भी क्या हो सकता है? बुद्ध ने यह नहीं कहा कि जो मैं कहता हूँ उस पर भरोसा कर लो। बुद्ध का कहना है कि मुझ पर भरोसा मत करो, मैं जो कहता हूँ उस पर इसलिए भरोसा मत करना कि मैं कहता हूँ, बल्कि सोचो, विचारो, विश्लेषण करो, खोजो, अपने अनुभव की कसौटी पर सही हो जाए तो ही सही है।

गौतम बुद्ध ने कहा सब क्षणिक है। यह सारा संसार प्रति पल और प्रति क्षण बदल रहा है। यहाँ कुछ भी स्थिर नहीं है। जन्म है, तो मृत्यु है। जवानी है, तो बुढ़ापा है। स्थिर न होने के कारण ही बड़ी बेचैनी रहती है क्योंकि जो भी है उसका भरोसा नहीं है। शाश्वत, सनातन, अपरिवर्तनीय की खोज का नाम धर्म है, ध्यान है, समाधि है, शान्ति है, निर्वाण है। जिसने इस सत्य को जान लिया, उसने सब जान लिया। गौतम बुद्ध द्वारा बताए गए चार आर्य सत्य हैं –

1. वस्तु मात्र क्षणिक और दुःख रूप होती है।
2. संसार के क्षणिक पदार्थों की तृष्णा ही सारे दुःखों का मूल कारण है।
3. इन तृष्णाओं का नाश होने से ही मानव के दुःखों का अन्त हो जाता है।
4. जब मानव—हृदय से राग द्वेष और अहं भावना की सारी वृत्तियाँ हट जाती हैं तभी मानव को पूर्ण ज्ञान अर्थात् निर्वाण की प्राप्ति हो सकती है।

गौतम बुद्ध ने कहा मायावी संसार में दुःख—ही—दुःख हैं। दुःख आर्य सत्य है। दुःख का मूल वासना या तृष्णा है। तृष्णा और दुःख में कारण कार्य का संबंध है। तृष्णा को हमेशा के लिए मिटाने से दुःख का हमेशा के लिए नाश सम्भव है। जिसने हाथ, पैर और वाणी को संयम में रखा है, वही सर्वोत्तम संयमी है। उनकी दृष्टि में भिक्षु वही है जो अपने में मस्त है, जो संयत है, एकांत सेवी है और सन्तुष्ट है। महात्मा बुद्ध के मत के पाँच सिद्धान्त हैं –

1. जीवन में न तो सर्वथा वैराग्य और साधना में लीन रहना चाहिए और न विलास में ही। सादा जीवन व्यतीत करना चाहिए।
2. संसार दुःखमय है। दुःखों का कारण वासना है। तृष्णा की समाप्ति से दुःख दूर होते हैं, तृष्णा को दूर करने के 8 साधन हैं।
3. सत्य—दृष्टि, सत्य—भाव, सत्य—भाषण, सत्य—व्यवहार, सत्य—निर्वाह, सत्य—पालन, सत्य—विचार और

सत्य—ध्यान से मनुष्य इस लोक और परलोक दोनों में सुखी रह सकता है।

4. यज्ञ और तपस्या व्यर्थ है। वास्तविक शुद्धि के लिए आत्म—परिष्कार आवश्यक है।
5. जन्म से कोई बड़ा या छोटा नहीं होता। प्रत्येक व्यक्ति को भक्ति का अधिकार है।

बुद्ध की धर्म की व्याख्या – ‘अहिंसा परमोधर्म’। अपने इस अहिंसामूलक धर्म के प्रचार के लिए बुद्ध ने ‘भिक्षु संघ’ की स्थापना की। उन्होंने गांव—गांव घूमकर ‘धम्म शरणं गच्छामि’ का मन्त्र प्रचारित किया। अन्त में भिक्षुओं को उपदेश देते रहे कि भिक्षुओं तुम सर्व साधारण के हित के लिए, कल्याण के लिए, मंगल के लिए, गली—गली, ग्राम—ग्राम, नगर—नगर, घर—घर घूम जाओ लोगों को शान्ति का, संतोष का, सत्य का, आनन्द का संदेश दो। लोग अकारण बहुत दुःखी हैं, संतप्त हैं, पीड़ित हैं, क्लेश में हैं, कष्ट में हैं, उनके अज्ञान को नष्ट करो, उनकी अविद्या को दूर करो, उनके व्यर्थ के भ्रम और संदेहों को दूर करो।

बुद्ध ने कहा कि वास्तविक धर्म शरीर को तपाने तथा यज्ञों में पशुओं की बलि देने में नहीं है, बल्कि सच्चे और सदाचारमय जीवन व्यतीत करने में है। गौतम बुद्ध ने कर्मकाण्ड के रूप में यज्ञ में जो निष्ठुर पशु बलि दी जाती थी उसे निंदनीय ठहराकर उसका तीव्र विरोध किया। उनका कहना था कि आत्मा, हृदय व प्राण पशु—पक्षी में भी हैं। मानव के मन में प्रविष्ट पशुत्व को निकालने के लिए अहिंसा व प्रेम का प्रचार किया। उन्होंने कहा कि वास्तविक बुद्ध वे हैं जो समस्त प्राणियों के दुःख को अपना दुःख समझते हैं, क्षुद्रातिक्षुद्र जीवों को भी मुक्त कराने के पश्चात अपनी मुक्ति की कामना करते हैं और जो दुःखी प्राणियों की सेवा को स्वर्ग मानकर उसमें विहार करते हैं। उनका कहना है कि क्रोध को प्रेम से, पाप को सदाचार से, लोभ को दान से और असत्य को सत्य से जीता जा सकता है।

बुद्ध के अनुसार धम्म यानी धर्म वही है जो सबके लिए ज्ञान के द्वार खोल दे। उनके अनुसार केवल विद्वान होना ही पर्याप्त नहीं हैं, विद्वान वही है जो अपने ज्ञान की रोशनी से सबको रोशन कर दे।

महान दार्शनिक, वैज्ञानिक, धर्मगुरु एवं उच्च कोटि के समाज सुधारक महात्मा बुद्ध जैसे महान मानव पर भारत ही नहीं, समस्त विश्व को गर्व है। ‘सत्य’ और ‘अहिंसा’ जैसे महान तत्व के लिए भगवान बुद्ध भारत के लिए सदा संस्मरणीय एवं वन्दनीय रहेंगे। □

हार की जीत



सुदर्शन (1895-1967) प्रेमचन्द परम्परा के कहानीकार हैं। इनका असली नाम बदरीनाथ है। इनका जन्म सियालकोट में 1896 में हुआ था। प्रेमचन्द के समान आप भी उर्दू से हिन्दी में आये थे। सुदर्शन की भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावोत्पादक और मुहावरेदार है।

लाहौर की उर्दू पत्रिका हजार दास्ताँ में उनकी अनेकों कहानियाँ छपीं। उनकी पुस्तकें मुम्बई के हिन्दी ग्रन्थ रत्नाकर कार्यालय द्वारा भी प्रकाशित हुईं। उन्हें गद्य और पद्य दोनों ही में महारत थी। 'हार की जीत' उनकी पहली कहानी है और 1920 में सरस्वती में प्रकाशित हुई थी। वे 1950 में बने फिल्म लेखक संघ के प्रथम उपाध्यक्ष थे। 1945 में महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित अखिल भारतीय हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, वर्धा की साहित्य परिषद् के सम्मानित सदस्यों में थे। उनकी रचनाओं में तीर्थ-यात्रा, पत्थरों का सौदागर, पृथ्वी-वल्लभ आदि के नाम उल्लेखनीय हैं।

माँ को अपने बेटे और किसान को अपने लहलहाते खेत देखकर जो आनंद आता है, वही आनंद बाबा भारती को अपना घोड़ा देखकर आता था। भगवद्-भजन से जो समय बचता, वह घोड़े को अर्पण हो जाता। वह घोड़ा बड़ा सुंदर था, बड़ा बलवान। उसके जोड़ का घोड़ा सारे इलाके में न था। बाबा भारती उसे 'सुल्तान' कह कर पुकारते, अपने हाथ से खरहरा करते, खुद दाना खिलाते और देख-देखकर प्रसन्न होते थे। उन्होंने रुपया, माल, असबाब, जमीन आदि अपना सब-कुछ छोड़ दिया था, यहाँ तक कि उन्हें नगर के जीवन से भी घृणा थी। अब गाँव से बाहर एक छोटे-से मन्दिर में रहते और भगवान का भजन करते थे।

'मैं सुल्तान के बिना नहीं रह सकूँगा', उन्हें ऐसी भ्रान्ति सी हो गई थी। वे उसकी चाल पर लड्डू थे। कहते, 'ऐसे चलता है जैसे मोर घटा को देखकर नाच रहा हो।' जब तक संध्या समय सुल्तान पर चढ़कर आठ-दस मील का चक्कर न लगा लेते, उन्हें चैन न आता।

खडगसिंह उस इलाके का प्रसिद्ध डाकू था। लोग उसका नाम सुनकर काँपते थे। होते-होते सुल्तान की कीर्ति उसके कानों तक भी पहुँची। उसका हृदय उसे देखने के लिए अधीर हो उठा। वह एक दिन दोपहर के समय बाबा भारती के पास पहुँचा और नमस्कार करके

बैठ गया। बाबा भारती ने पूछा, 'खडगसिंह, क्या हाल है?'

खडगसिंह ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, 'आपकी दया है।'

'कहो, इधर कैसे आ गए?'

'सुल्तान की चाह खींच लाई।'

'विचित्र जानवर है। देखोगे तो प्रसन्न हो जाओगे।'

'मैंने भी बड़ी प्रशंसा सुनी है।'

'उसकी चाल तुम्हारा मन मोह लेगी!'

'कहते हैं देखने में भी बहुत सुंदर है।'

'क्या कहना! जो उसे एक बार देख लेता है, उसके हृदय पर उसकी छवि अंकित हो जाती है।'

'बहुत दिनों से अभिलाषा थी, आज उपस्थित हो सका हूँ।'

बाबा भारती और खडगसिंह अस्तबल में पहुँचे। बाबा ने घोड़ा दिखाया घमंड से, खडगसिंह ने देखा आश्चर्य से। उसने सैंकड़ो घोड़े देखे थे, परन्तु ऐसा बाँका घोड़ा उसकी आँखों से कभी न गुजरा था। सोचने लगा, भाग्य की बात है। ऐसा घोड़ा खडगसिंह के पास होना चाहिए था। इस साधु को ऐसी चीजों से क्या लाभ? कुछ देर तक आश्चर्य से चुपचाप खड़ा रहा। इसके पश्चात् उसके हृदय में हलचल होने लगी।





बालकों की—सी अधीरता से बोला, 'परंतु बाबाजी, इसकी चाल न देखी तो क्या?'

दूसरे के मुख से सुनने के लिए उनका हृदय अधीर हो गया। घोड़े को खोलकर बाहर गए। घोड़ा वायु—वेग से उड़ने लगा। उसकी चाल को देखकर खड़गसिंह के हृदय पर साँप लोट गया। वह डाकू था और जो वस्तु उसे पसंद आ जाए उस पर वह अपना अधिकार समझता था। उसके पास बाहुबल था और आदमी भी। जाते—जाते उसने कहा, 'बाबाजी, मैं यह घोड़ा आपके पास न रहने दूँगा।'

बाबा भारती डर गए। अब उन्हें रात को नींद न आती। सारी रात अस्तबल की रखवाली में कटने लगी। प्रति क्षण खड़गसिंह का भय लगा रहता, परंतु कई मास बीत गए और वह न आया। यहाँ तक कि बाबा भारती कुछ असावधान हो गए और इस भय को स्वप्न के भय की नाई मिथ्या समझने लगे। संध्या का समय था। बाबा भारती सुल्तान की पीठ पर सवार होकर घूमने जा रहे थे। इस समय उनकी आँखों में चमक थी, मुख पर प्रसन्नता। कभी घोड़े के शरीर को देखते, कभी उसके रंग को और मन में फूले न समाते थे। सहसा एक ओर से आवाज आई, 'ओ बाबा, इस कंगले की सुनते जाना।'

आवाज में करुणा थी। बाबा ने घोड़े को रोक लिया। देखा, एक अपाहिज वृक्ष की छाया में पड़ा कराह रहा है। बोले, 'क्यों तुम्हें क्या कष्ट है?'

अपाहिज ने हाथ जोड़कर कहा, 'बाबा, मैं दुखियारा हूँ। मुझ पर दया करो। रामावाला यहाँ से तीन मील है, मुझे वहाँ जाना है। घोड़े पर चढ़ा लो, परमात्मा भला करेगा।'

'वहाँ तुम्हारा कौन है?'

'दुर्गादत्त वैद्य का नाम आपने सुना होगा। मैं उनका सौतेला भाई हूँ।'

बाबा भारती ने घोड़े से उतरकर अपाहिज को घोड़े पर सवार किया और स्वयं उसकी लगाम पकड़कर धीरे—धीरे चलने लगे। सहसा उन्हें एक झटका—सा लगा और लगाम हाथ से छूट गई। उनके आश्चर्य का ठिकाना न रहा, जब उन्होंने देखा कि अपाहिज घोड़े की पीठ पर तनकर बैठा है और घोड़े को दौड़ाए लिए जा रहा है। उनके मुख से भय, विस्मय और निराशा से मिली हुई चीख निकल गई। वह अपाहिज डाकू खड़गसिंह था। बाबा भारती कुछ देर तक चुप रहे और कुछ समय पश्चात् कुछ निश्चय करके पूरे बल से चिल्लाकर बोले, 'जरा ठहर जाओ।'

खड़गसिंह ने यह आवाज सुनकर घोड़ा रोक लिया और उसकी गरदन पर प्यार से हाथ फेरते हुए कहा, 'बाबाजी, यह घोड़ा अब न दूँगा।'

'परंतु एक बात सुनते जाओ।' खड़गसिंह ठहर गया।

बाबा भारती ने निकट जाकर उसकी ओर ऐसी आँखों से देखा जैसे बकरा कसाई की ओर देखता है और कहा, 'यह घोड़ा तुम्हारा हो चुका है। मैं तुमसे इसे वापस करने के लिए न कहूँगा। परंतु खड़गसिंह, केवल एक प्रार्थना करता हूँ। इसे अस्वीकार न करना, नहीं तो मेरा दिल टूट जाएगा।'

'बाबाजी, आज्ञा कीजिए। मैं आपका दास हूँ, केवल घोड़ा न दूँगा।'

'अब घोड़े का नाम न लो। मैं तुमसे इस विषय में कुछ न कहूँगा। मेरी प्रार्थना केवल यह है कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना।'

खड़गसिंह का मुँह आश्चर्य से खुला रह गया। उसका विचार था कि उसे घोड़े को लेकर यहाँ से भागना पड़ेगा परंतु बाबा भारती ने स्वयं उसे कहा कि इस घटना को किसी के सामने प्रकट न करना। इससे क्या प्रयोजन सिद्ध हो सकता है? खड़गसिंह ने बहुत सोचा, बहुत सिर मारा, परंतु कुछ समझ न सका। हारकर उसने अपनी आँखें बाबा भारती के मुख पर गड़ा दीं और पूछा, 'बाबाजी इसमें आपको क्या डर है?'

सुनकर बाबा भारती ने उत्तर दिया, 'लोगों को यदि इस घटना का पता चला तो वे दीन-दुखियों पर विश्वास न करेंगे।' यह कहते-कहते उन्होंने सुल्तान की ओर से इस तरह मुँह मोड़ लिया जैसे उनका उससे कभी कोई संबंध ही नहीं रहा हो।

बाबा भारती चले गए। परंतु उनके शब्द खड़गसिंह के कानों में उसी प्रकार गूँज रहे थे। सोचता था, कैसे ऊँचे विचार हैं, कैसा पवित्र भाव है! उन्हें इस घोड़े से प्रेम था, इसे देखकर उनका मुख फूल की नाईं खिल जाता था। कहते थे, 'इसके बिना मैं रह न सकूँगा।' इसकी रखवाली में वे कई रात सोए नहीं। भजन-भक्ति न कर रखवाली करते रहे। परंतु आज उनके मुख पर दुख की रेखा तक दिखाई न पड़ती थी। उन्हें केवल यह ख्याल था कि कहीं लोग दीन-दुखियों पर विश्वास करना न छोड़ दे। ऐसा मनुष्य, मनुष्य नहीं देवता है।

रात्रि के अंधकार में खड़गसिंह बाबा भारती के मंदिर पहुँचा। चारों ओर सन्नाटा था। आकाश में तारे टिमटिमा रहे थे। थोड़ी दूर पर गाँवों के कुत्ते भौंक रहे थे। मंदिर के अंदर कोई शब्द सुनाई न देता था। खड़गसिंह सुल्तान की बाग पकड़े हुए था। वह धीरे-धीरे अस्तबल के फाटक पर पहुँचा। फाटक खुला पड़ा था। किसी समय वहाँ बाबा भारती स्वयं लाठी लेकर पहरा देते थे, परंतु आज उन्हें किसी चोरी, किसी डाके का भय न था। खड़गसिंह ने आगे बढ़कर सुल्तान को उसके स्थान पर बाँध दिया और बाहर निकलकर सावधानी से



फाटक बंद कर दिया। इस समय उसकी आँखों में नेकी के आँसू थे। रात्रि का तीसरा पहर बीत चुका था। चौथा पहर आरंभ होते ही बाबा भारती ने अपनी कुटिया से बाहर निकल ढंडे जल से स्नान किया। उसके पश्चात, इस प्रकार जैसे कोई स्वप्न में चल रहा हो, उनके पाँव अस्तबल की ओर बढ़े। परंतु फाटक पर पहुँचकर उनको अपनी भूल प्रतीत हुई। साथ ही घोर निराशा ने पाँव को मन-मन भर का भारी बना दिया। वे वहीं रुक गए। घोड़े ने अपने स्वामी के पाँवों की चाप को पहचान लिया और जोर से हिनहिनाया। अब बाबा भारती आश्चर्य और प्रसन्नता से दौड़ते हुए अंदर घुसे और अपने प्यारे घोड़े के गले से लिपटकर इस प्रकार रोने लगे मानो कोई पिता बहुत दिन से बिछड़े हुए पुत्र से मिल रहा हो। बार-बार उसकी पीठ पर हाथ फेरते, बार-बार उसके मुँह पर थपकियाँ देते। फिर वे संतोष से बोले, 'अब कोई दीन-दुखियों से मुँह न मोड़ेगा।'



राजभाषा हिन्दी को हृदय से अंगीकार कर उसमें सरकारी कार्य करना आज की सबसे बड़ी आवश्यकता है।

यदि भारतीय लोक-कला, संस्कृति और राजनीति में हम एक रहना चाहते हैं तो इसका माध्यम हिंदी ही हो सकती है।

फैलता प्रदूषण और समाधान

मीनाक्षी गुप्ता*



ध्वनि प्रदूषण शोर के कारण होता है। यह शोर चाहे वाहनों के हॉर्न से हो या ऊंची आवाज के लाउड स्पीकर से हो। शहरों की स्थिति यह है कि सवेरे सात बजे से लेकर रात ग्यारह बजे तक सड़कों पर वाहनों की आवाजाही लगी रहती है। जिससे शहरों में शोर के वातावरण में रहने को मजबूर होना पड़ता है। महानगरों में विदेशी कार्यालय हैं जो समय के अंतर के कारण सारी रात खुले रहते हैं। उनकी गाड़ियाँ सारी रात कर्मचारियों को लेने तथा छोड़ने के लिए सड़कों पर दौड़ती रहती हैं। बुजुर्गों तथा बीमार व्यक्तियों के लिए तो आराम करना दूभर हो जाता है।

पढ़ने वाले विद्यार्थी के लिए भी मन को एकाग्र करना बहुत मुश्किल हो जाता है। घरों में भी टीवी की आवाज और अब तो हर घर में टीवी है, जिसने ध्वनि प्रदूषण को और अधिक कर दिया है। कुछ लोग मोबाइल पर ऊंचा बोल-बोल कर सार्वजनिक स्थानों पर, बसों में, मेट्रो में तथा सड़कों पर बात करते हैं उनकी आवाज ही आस-पास के लोगों को परेशान कर देती है।

हम सबकी यह सामाजिक जिम्मेवारी है कि मोबाइल पर धीरे बोलें तथा वाहनों में ऊंची आवाज वाले तथा भयानक आवाज वाले हॉर्न न लगवाएं। जब तक बहुत जरूरी न हो हॉर्न नहीं बजाना चाहिए। ऊंची आवाज के हॉर्न लगाने पर पूर्ण पाबंदी होनी चाहिए। सरकार द्वारा भी ऐसे हॉर्न पर चालान तथा जुर्माने का प्रावधान होना चाहिए। इस दिशा में सरकार को सख्त

नए जमाने और आधुनिकीकरण की देन है प्रदूषण। ध्वनि प्रदूषण, भूमि प्रदूषण, जल प्रदूषण और एक नये दौर का ई-प्रदूषण।

कार्रवाई करनी चाहिए और कानून को सख्ती से लागू करना चाहिए। जिससे प्रदूषण और शोर को कम किया जा सके। जिस प्रकार विदेशों में चार बार चालान होने के बाद लाइसेन्स रद्द हो जाता है, उसी प्रकार का प्रावधान हमारे देश में हो, जिससे सभी कानून के दायरे में रहें। वैसे तो हम सब कि यह सामाजिक जिम्मेवारी है कि हम वायु तथा ध्वनि प्रदूषण न फैलाएं और न किसी को फैलाने दें।

भूमि प्रदूषण फैलता है अंधाधुंध दोहन और पेड़ों को काटने से। पेड़ भूमि को बांधे रखते हैं, मिट्टी को बहने नहीं देते, मिट्टी के बहने से उसके पोषक तत्व भी उसके साथ बह जाते हैं। जल कुप्रबंधन के कारण भी उपजाऊ खेती की भूमि में पानी जमा होकर मिट्टी में खारेपन की विकट समस्या को जन्म देता है।

कई बार कुछ ऐसे पेड़-पौधे होते हैं जिनसे भूमि की उर्वरा शक्ति को खतरा होता है। यदि लंबे समय तक ऐसे पेड़ भूमि में लगाए जाते हैं तो भूमि प्रदूषित हो जाती है। उसके पोषक तत्व पूर्णतः नष्ट हो जाते हैं।

नीम के फायदों से सभी परिचित हैं। नीम न केवल पर्यावरण के अनुकूल है बल्कि जिन कीटों पर वह नियंत्रण बनाए रखता है उनके लिए भी नुकसानदेह नहीं है।

शहरों में कंकरीट के जंगल कृषि योग्य भूमि को खाये जा रहे हैं। पिछले दो दशकों से खेती में रासायनिक खादों के बढ़ते प्रयोग के कारण भूमि की खाद्यान्न क्षमता थम-सी गई है।

भूमि प्रदूषण का एक अन्य कारण खनन भी है। खनन से भूमि में बड़े-बड़े गड्ढे बनाकर भूमि को खोखला ही नहीं किया जाता है, बल्कि उसके आस-पास की

* प्रधान निजी सचिव, डब्ल्यूडीआरए, नई दिल्ली

भूमि भी बंजर होकर मृतप्राय हो जाती है। खनन से भूमि का भयंकर दोहन तो किया जाता है पर खनन क्षेत्र को सँवारने में कोई भी दिलचस्पी नहीं ले रहा है। जिस कारण भूमि लगातार विकृत एवं प्रदूषित होती चली जा रही हैं।

खनन के बाद भूमि संवर्धन किया जाना बहुत जरूरी है। खनन के बाद यदि भूमि संरक्षण एवं भूमि उपचार का कार्य चलाया जाता है तो उससे खनन से परित्यक्त पर्याप्त भूमि को नया रूप दिया जा सकता है।

जल प्रदूषण फैलता है जब गंदा पानी, रसायन मिला पानी तथा शौचालयों का गंदा पानी नदियों में तथा पीने वाले पानी में मिल जाता है। पानी का स्वभाव चलना होता है। जब वही पानी पीने के लिए इस्तेमाल किया जाता है और साफ करने के बावजूद भी उसे पूर्ण रूप से साफ नहीं कर पाते तो वह शरीर में विष का कार्य करता है। जल प्रदूषण सबसे खतरनाक तब होता है, जब रसायनिक तत्व पानी में मिल जाते हैं और उसी पानी को खेती के लिए इस्तेमाल किया जाता है, तो रसायनिक तत्व पानी द्वारा खाद्य उत्पादों में भी आ जाते हैं जिससे शरीर को बहुत नुकसान होता है।

पशु-पक्षी भी जब उस रासायनिक पानी को पीते हैं तो उनके शरीर में भी वह रसायन पहुँच जाते हैं और मांसाहार का सेवन करने वालों को नुकसान देता है।

सरकारी स्तर पर यह व्यवस्था हो कि रसायनिक प्रदूषित जल नदियों में सीधे न गिराया जाए। उस जल की अशुद्धियाँ दूर कर उसे उपयोग में लाया जाना चाहिए।

कारखानों से निकलने वाला गंदा पानी, शहरों के अवशिष्ट पदार्थों वाला गंदा पानी सीधे नदियों में न मिलाया जाए।

अपने स्तर पर पानी में कुछ भी प्रवाह नहीं करना चाहिए। हिन्दू मान्यताओं के अनुसार पूजा के फूल, टूटी मूर्तियाँ, वस्त्र आदि जल में प्रवाहित किया जाता है। अब समय के अनुसार उसे जल में प्रवाह न कर भूमि

में गाढ़ दें या उसको नष्ट करने का कोई और तरीका ढूँढना चाहिए।

इन चारों प्रदूषणों के अलावा अब एक नया प्रदूषण ई-प्रदूषण भी सामने आया है जो मोबाइल फोन से निकलने वाले विकिरण के कारण है। आज हर किसी के पास फोन है इस कारण जगह-जगह मोबाइल नेटवर्क को सुचारु रूप से चलाने के लिए बहुत पास-पास इनके टावर लगाए जाते हैं। इनसे निकालने वाला विकिरण मानव स्वास्थ्य के लिए बहुत बड़ा खतरा बनता जा रहा है। विकिरण से हृदय तथा शरीर के कई अन्य अंगों पर भी बुरा असर होता है।

जब नए मोबाइल लिए जाते हैं तो पुराने मोबाइल की बेटरियाँ तथा पुराने मोबाइल को किस प्रकार नष्ट किया जाए, यह भी वातावरण के लिए एक समस्या बनता जा रहा है।

सामाजिक रूप से भी हम मोबाइल के आने के बाद एकाकी हो गए हैं। बातचीत के लिए नाते रिश्तेदारों से मिलने के बजाए फोन, ईमेल या व्हाट्स एप पर बात कर लेते हैं। जिससे आपसी प्रेम खत्म होता जा रहा है, केवल दिखावे की रिश्तेदारी बढ़ती जा रही है। घर के हर सदस्य के अपने दोस्त हैं जो उनसे बातचीत में व्यस्त है। एक परिवार में रहते हुए भी आपस में उनकी बातचीत बहुत ही कम दिखाई देती है। हर समय, हर कोई आपको मोबाइल में व्यस्त दिखाई देगा। आपसी सामाजिक बंधन, प्रेम, लगाव सब समाप्त होता जा रहा है। जिससे जीवन में हताशा, निराशा तथा चिंता, तनाव बढ़ता जा रहा है।

आपसी बातचीत से हमें सहारा, प्रोत्साहन तथा समस्याओं का समाधान मिल जाता है जिससे परिवार में प्रेम तथा सौहार्द बना रहता है।

हमें अपने परिवार व समाज को इस नए ई-प्रदूषण से बचाए रखना चाहिए।

हम सभी को अपने-अपने स्तर पर इन प्रदूषणों से बचने की कोशिश करनी चाहिए तथा परिवार और समाज को भी इनसे बचाने के लिए निरंतर प्रयास करना चाहिए।



रिटायरमेंट की पहली वर्षगाँठ

के.सी.एस. नेगी*

कभी नौकरी लगने की चिंता थी और अब रिटायर्ड जिन्दगी जीने का समय भी आ गया। सच ही कहा है, समय बड़ा बलवान होता है, बदली हुई परिस्थितियों के अनुरूप अपने को बदलने की चुनौती सामने थी। नौकरीपेशा लोगों के लिए यह बदलाव बहुत माने रखता है क्योंकि एक लम्बे समय के दौरान जो आदतें बन गयी थीं, उसमें एकदम बदलाव लाना एक टेढ़ी खीर होती है लेकिन यदि शालीनता से इसे स्वीकार करें तो यह बदलाव नये चित्त प्रवृत्ति को सहजता में लाने में बड़ी सहायक होती है।

रिटायरमेंट के बाद, सर्विस के दौरान बन चुके प्रोग्रामिंग में बदलाव के लिए मैंने 4 साल पहले से ही अपने लिए कुछ कार्यक्रम निर्धारित किये जिससे स्वच ओवर आसानी से हो सके, अतएव मैंने निम्नलिखित तरीके से रुपरेखा बनायी और उसे लागू किया :-

1. अपने जन्म स्थान यानी पैतृक स्थान उत्तराखंड जो पलायन के कारण जनविहीन होते जा रहे थे, में अपने सामर्थ्य के अनुरूप निःस्वार्थ सेवा से कुछ करने की भावना ने मुझे फिर नौकरी न कर, गाँव जाने की प्रेरण पा दी और इसके लिये अपने रिटायरमेंट फण्ड का 10 प्रतिशत इसके लिये सुरक्षित करने का फैसला लिया।
2. पलायन के कारण मेरे घर में भी ताला लगा हुआ था क्योंकि सभी भाई लोग गाँव से अन्यत्र सेटल हो गए थे। सबसे पहले गाँव में शौचालय बनाया फिर मकान का जिर्णोधर किया, लेकिन केवल वहां रहने व खाने से काम नहीं चलने वाला था। सारी जमीन बंजर हो चली थी अतएव इन बंजर हुए खेतों में पेड़ लगाना उचित समझा लेकिन बंदरों, सुअरों व अन्य जानवरों का आतंक व नुकसान इसमें आड़े आ रहा था। लोहे की जालियां बनाकर इसका हल ढूँढा गया। इस प्रकार आंवला, अखरोट, रीठा, तेजपत्ता की पहले नर्सरी की गयी। गाँव के 11 लोगों को चुनकर पन्त नगर विश्वविद्यालय से 2 दिन की नर्सरी की ट्रेनिंग कराई। आज की तारीख में 02 पौध मित्रों की सक्रिय मदद से, 90 पौधे अपने शैशव काल में चल रहे हैं और साथ में मेरे रिटायरमेंट लाईफ के समय ने भी इसमें योगदान दिया है।
3. एक समस्या और मुंह बाये खड़ी थी। मेरे पैतृक गाँव उत्तराखंड में आने के लिए कम से कम 2 किलोमीटर

पैदल जाना पड़ता था। आजादी के 70 साल के बाद अनेक प्रयासों के बावजूद भी सरकार ने इस ओर कोई ध्यान नहीं दिया। नौकरी के दौरान जब भी शादी-ब्याह में घर जाना पड़ता था, हर वक्त मोटर मार्ग की कमी बहुत अखरती थी। एक सपना था कि कैसे, कब मोटर मार्ग से मेरा गाँव जुड़ेगा। इसी कमी से नई पीढ़ी गाँव से दूर होती जा रही थी, नतीजतन 446 की आबादी में से केवल 50 लोगों से कम ही गाँव में रह रहे थे, अपने साधनों से सड़क बनाना, यह सोचना भी कोई आसान काम नहीं था। लेकिन यह भी कहा जाता है कि दृढ़ निश्चय के आगे एवरेस्ट भी नतमस्तक हो जाता है। गाँव की महिला प्रधान के लौह इरादे और मेरे सक्रिय सहयोग से आज गाँव तक 12 फीट चौड़ी सड़क का निर्माण हो गया। सरकार के मदद के बिना गाँव, सड़क मार्ग से आखिर जुड़ गया। यह सब कार्य महिला मंगल दल की बरसों की माइक्रो बैंकिंग और तीन लोगों की व्यक्तिगत पूंजी से सम्पन्न हुआ और इस पूरी प्रक्रिया में मेरा रिटायरमेंट का पैसा व समय बहुत काम आया। हम लोगों के इस प्रयास से आस-पास के गाँवों के लिए भी मिसाल बन गयी और इससे प्रेरित होकर पास के दो गाँव के लोगों ने भी बिना सरकारी मदद के अपने गाँव सड़क मार्ग से जोड़ दिए हैं।

4. रिटायरमेंट के बाद सबसे बड़ा सवाल समय का उचित प्रबंधन करना होता है क्योंकि अब रेगुलर जिन्दगी की कड़ी टूट गयी होती है। चूंकि मैं 16 साल से सहज योग का एक नियमित अभ्यासी था, अतएव सुबह का समय मैंने उसी तरह व्यवस्थित रखा। उसके बाद एक घंटा सुबह घूमने के लिये और बढ़ा लिया। इस तरह



* पूर्व वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (सामान्य), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

अपनी दिनचर्या को मजबूती के साथ चलाता गया। इस दौरान किसी प्रकार की बीमारी के लपेट में नहीं आया लेकिन जून का महीना मेरे पूरे परिवार के लिये एक परीक्षा की घड़ी लेकर आया – इस दौरान मेरे बड़े पौत्र को ब्रेन फीवर (एनसेफेलिटिस) की शिकायत हो गयी, मुझे और श्रीमती को गाँव से आपात स्थिति में वापस आना पड़ा, भगवान की दुआ और दवा से सब कुछ सही होकर महीने के अंदर एकदम ठीक होकर घर आ गया। इस दौरान मुझे जिन्दगी के बारे में बहुत कुछ सीखने को मिला।

इस तरह रिटायरमेंट का एक साल कुल मिलाकर जहाँ एक ओर अपनी जड़ से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ और दूसरी ओर समाज के प्रति अपने दायित्व का संतोषजनक रूप से निर्वाह भी हो गया और रिटायरमेंट का पहला साल आगे आने वाले सालों के लिये एक पथ प्रदर्शक का काम भी कर गया। अब इसी क्रम को आगे बढ़ाते हुए दूसरे वर्षगाँठ की शुरुआत भी अपने गाँव से ही कर रहा हूँ। आशा करता हूँ आने वाले वर्षों में कुछ नया होगा और गाँव में बंजर पड़े खेतों में मैं और पेड़ लगाकर अपने पुरखों की मेहनत के साथ कुछ न्याय कर सकूँगा।



विचारों का मैलापन

रेखा दुबे*

कहने को आधुनिक युग, लेकिन आधुनिकता है कहां। यह विचार अक्सर मस्तिष्क को झंझोड़ देता है। वास्तव में आधुनिकता हमारे इंफ्रास्ट्रक्चर में, रहन-सहन में, वेशभूषा में या विचारों में है। वास्तव में रहन-सहन में आज हम आधुनिकता की श्रेणी में धीरे-धीरे आ रहे हैं, लेकिन उससे भी ज्यादा वेशभूषा में। पाश्चात्य सभ्यता का रंग और खुलापन आज हमारे बाजारों से हमारे घर तक पहुंच गया है लेकिन हमारे विचार या संस्कार तो आज भी पुराने ही हैं और मेरे विचार से इस पीढ़ी तक पुराने ही रहेंगे। उसके बाद आज का युवा वर्ग हमारे संस्कारों या विचारों को संजोकर रख पाएगा, यह बात मेरा मन-मस्तिष्क मानने को तैयार नहीं है। लेकिन ये आधुनिकता हमें कहां ले जा रही है, यह विचारणीय है। आधुनिकता की दौड़ में हम आगे बढ़ रहे हैं या हमारे संस्कार पीछे जा रहे हैं, यह प्रश्नचिन्ह है? दिल्ली की मेट्रो में हमारी संस्कृति पर पाश्चात्य सभ्यता का रंग पूरी तरह से चढ़ा हुआ मिलता है।

मैं समय के साथ आगे बढ़ने की दिशा में हूँ लेकिन सिर्फ वेशभूषा में ही नहीं, विचारों और संस्कारों को साथ लेकर। पहले लव मैरिज हमारे समाज में स्वीकार्य नहीं थी। माता-पिता समाज में बदनामी के डर से घर से निकल पाने में समर्थ नहीं हो पाते थे मानो उनके बच्चों ने कोई गुनाह किया हो। लेकिन आज लव मैरिज एक आम बात है और एक अच्छी शुरुआत भी। एक दूसरे को जानने के बाद अपने जीवन में शामिल करना

विचारों की आधुनिकता के साथ-साथ एक सोच-समझ कर लिया गया निर्णय भी है। आधुनिकता के बावजूद क्या आज हम रात में किसी लड़की को अकेली देखकर अपने विचारों का मैलापन धो पाते हैं? ये भी एक प्रश्नचिन्ह है। हमारी सोच आज भी वहां छोटी महसूस होती है जब एक लड़की रात को घर देर से आती है तो आसपास वालों की नजर आज भी उसे अजीब नजरों से देखती है। ऐसे में, अगर उसकी वेशभूषा में खुलापन हो तब तो उसके चरित्र पर भी अंगुली उठ जाती है और हमारी नजर में स्वतः ही उसका सम्मान घट जाता है। मेरा मानना है कि समय के साथ-साथ बदलाव जरूरी है लेकिन बस चकाचौंध भरे समाज में ऊपरी दिखावे के लिए नहीं बल्कि अपने भीतर के आवरण, सोच तथा विचारों में भी परिवर्तन आवश्यक है। किसी अकेली महिला या लड़की को देखकर उसके प्रति अपने मन में उत्पन्न दूषित विचारधारा को अब बदलना होगा क्योंकि अब नारी ने घर की चारदीवारी से अपने आपको बाहर निकाला है और उसे कार्यवश घर आने में देरी भी हो सकती है। आप सभी मेरी बात से सहमत होंगे कि हमारी संस्कृति बेहद खूबसूरत है और हमारे संस्कारों का तो विश्व में कहना ही क्या, इसलिए इस पर विदेशी सभ्यता के नकारात्मकता को लाए बगैर अपनी सोच को सकारात्मक करिये। हम इस आधुनिकता की दौड़ में अपने संस्कारों को सहेज कर अपने विचारों से मैलापन धोकर शामिल हों तो बेहतर होगा।

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

आज दो दिन हो गए हैं, बारिश रुकने का नाम नहीं ले रही, चारों तरफ कीचड़, पानी और किच-किच, कपड़े कहाँ सुखाऊँ? बाजार कैसे जाऊँ? बस इन्हीं चिंताओं ने घेर रखा है मुझे। गंदे जूते, गीला छाता और गीला रेनकोट लिए कोई घर में न आ जाये, इसकी हर समय पहरेदारी करो, बस यही है बारिश का मतलब अब तो। मैं न जाने क्यों परेशान हूँ, बच्चे तो खूब मजा ले रहे हैं बारिश का, इस सुहाने मौसम का। वैसे मौसम तो सच में बहुत अच्छा है पर मैं उसका आनंद क्यों नहीं ले पा रही, जैसे बचपन में लिया करती थी, न जाने किसका कुसूर है, मेरा, बारिश का या फिर समय का? मालूम नहीं पर मुझे अचानक से अपने बचपन की बारिश की बहुत याद आ रही है, जब मैं सही मायने में जीना, एन्जॉय करना जानती थी।

वो बचपन का जमाना था कितना मासूम, था कितना सुहाना। पता नहीं क्यों, पर बचपन आज तुम बहुत याद आ रहे हो। काश कोई ऐसा दरवाजा होता जिसके उस तरफ जाते ही तुम वापिस आ जाते। जिंदगी की आपा-धापी में तुम कहीं बहुत पीछे छूट गये पर आज मन कर रहा है कि एक बार फिर बचपन वापिस मिल जाए। तुम थे तो कोई गम नहीं



होता था, हर परेशानी सूरज के अस्त होने के साथ चली जाती थी। वक्त की इस रेस में हम सब कब इतने आगे निकल आए कि वो बचपन जिसे अब हम सबसे ज्यादा याद करते हैं, कहीं खो सा गया। सच, कितना मीठा सा था वो बचपन। वो बचपन ही तो होता था जहां हर रोज हम दोस्ती करते थे और हर रोज तोड़ते थे। एक बार हाथ बढ़ाने पर दोस्त को गले से लगाते थे और लंच को शेयर करने में अपनी शान समझते थे। उस दोस्ती की खनक आज भी दिल को सुकून और आँखों में चमक दे जाती है। जब तुम थे तो किसी भी रिश्ते की बंदिश

नहीं थी और आज जब तुम मुझसे दूर चले गए हो तो ये रिश्ते बांधते हैं। जब तुम थे तो दोस्त आते थे, जाते थे, लड़ते थे, रोते थे, हंसते थे, पर टूटते नहीं थे और अब हम हर रोज टूटते हैं पर जुड़ते शायद नहीं हैं। पहले मन को संभालना नहीं पड़ता था और अब ! सब बदल सा गया है, तुम भी तो बदल गए हो, छोड़कर जो चले गए हो तुम मुझे।

बचपन जीवन का सबसे सुंदर हिस्सा है। ये वो समय होता है जब हमारी एक अलग ही दुनिया होती है। न जिंदगी की भाग-दौड़ और न ही किसी चीज की चिंता। बस अपने में ही मस्त रहना। वो बारिश में झूमना, मिट्टी में खेलना, माँ की लोरियाँ और पिता की डांट।

अब तो बस ये सब एक ख्वाब की तरह ही लगता है। फिर दिल एक सवाल करता है – क्या यही जीना है? जब बचपन याद आता है तो एक पल को दिल करता है कि फिर से वो बचपन वापस आ जाए। पर ऐसा हो नहीं सकता। बचपन की यादें हमें अक्सर रुला जाती हैं। मैं दावे के साथ कह सकती हूँ, बचपन शब्द को पढ़ते या सुनते ही एक अजीब सी हलचल सबके भीतर महसूस होती है और न चाहते हुए भी वह शख्स

ऐसी यादों से भीग जाता है, जो बेहद खूबसूरत होती हैं। जाने-अनजाने में हमारा बचपन हमसे कैसे दूर होता चला गया, इसकी भनक भी नहीं लगी। दूर भी क्यों ना होता, जरा सोच कर देखें गलती किसकी थी? शायद हमें ही बड़े होने की जल्दी पड़ी थी। बड़ा बनना था, बाहर जाने के सपने थे, ढेर सारे पैसे कमाने थे वगैरह-वगैरह। बचपन बहुत भोला होता है, लेकिन हमें इससे पीछा छुड़ाना था। जो चला गया, वो कभी लौट कर नहीं आता फिर चाहे इंसान हो या फिर उम्र। यदि इस खूबसूरत बचपन की कीमत पहले ही पता चल

* वरिष्ठ निजी सहायक, निदेशक (कार्मिक) कार्यालय, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जाये, तो इंसान उसे अपने पास से जाने ही न दे और इसे संभाल कर रखने के लिए इसमें अपनी सारी कमाई लगा दे। बचपन की सुनहरी यादें, न जाने कहाँ ओझल हो गईं, जब भी पीछे मुड़कर देखते हैं तो एक खिली हुई मुस्कान चेहरे पे दस्तक दे जाती है, कैसे बीत जाते हैं पल, कैसे बचपन बस एक अहसास बन जाता है जिसे हर कोई जीना चाहता है पर वो कभी हाथ नहीं आता। मन खिल उठता है जब दिल उन गलियों से गुजरता है, कभी मुस्कान तो कभी आंसू, छलक जाते हैं। बचपन ऐसी ही कई यादों से सजा होता है। हर किसी को अपना बचपन याद आता है। हम सबने अपने बचपन को जीया है। शायद ही कोई होगा, जिसे अपना बचपन याद न आता हो। बचपन की अपनी मधुर यादों में माता-पिता, भाई-बहन, यार-दोस्त, स्कूल के दिन, हर किसी को याद हैं। बचपन में एक रूप की पतंग के पीछे दो किलोमीटर तक भागते थे, न जाने कितनी चोटें लगती थीं, वो पतंग भी हमें बहुत दौड़ाती थी परन्तु आज पता चला, दरअसल वो पतंग नहीं थी, एक चेलेंज थी। खुशियों को हासिल करने के लिए दौड़ना पड़ता है, वो दुकानों पे नहीं मिलती, शायद यही जिंदगी की दौड़ है। जब बचपन था, तो बड़ा होना एक स्वप्न था, जब बड़े हुए तो बचपन एक जमाना था। जब घर में रहते थे, आजादी अच्छी लगती थी, आज आजादी है, फिर भी घर जाने की जल्दी रहती है।

इस भीड़-भाड़ भरी जिंदगी की राहों में, हर-एक व्यक्ति दिन-रात जी-तोड़ मेहनत में लगा रहता है, क्यों? क्योंकि देखा जाए तो हम सबको घुमा-फिरा के बस एक ही चीज चाहिए, वो है 'खुशी', लेकिन सच पूछो तो लाख कोशिशों के बावजूद हम पूरी तरह से खुशी को पाने में सफल हो ही नहीं पाते। कभी इस चकाचौंध भरी दुनिया से फुर्सत मिले तो किसी छोटे बच्चे के साथ कुछ पल जी कर देखें, यकीनन आप उस कुछ पल में ही अपना बचपन उस बच्चे में पाओगे। वो खुशी जिसके लिए दिन-रात लगे रहते हो, उस बच्चे की मुस्कुराहट में मिल जायेगी। कुछ लोगों से पूछा कि आपके जीवन का सबसे सुंदर समय कौन-सा था? आपके अनुसार, मनुष्य जीवन का सबसे मधुर समय कौन-सा होता है? कौन-सा जीवन आप हमेशा जीना चाहेंगे: बाल्यावस्था, युवावस्था, या वृद्धावस्था? उनमें से ज्यादातर लोगों का उत्तर था : बाल्यावस्था। हममें से ज्यादातर का उत्तर

यही होगा। ऐसा क्या है बचपन में जो हमें इसकी ओर खींचता है? बचपन इतना मधुर क्यों लगता है? हम क्यों बार-बार बाल्यावस्था में डूबना चाहते हैं? उन बच्चों में से कुछ ने कहा कि, "बचपन सुंदर होता है क्योंकि बचपन में चिंताएँ नहीं होतीं। करियर क्या होता है, क्या बनना है, ये सारी चिंताओं से हम दूर रहते हैं। हमें इस बारे में परेशान नहीं होना पड़ता कि हम कितने प्रसिद्ध होंगे, कितनी शौहरत होगी हमारे पास, कितनी दौलत होगी, कितने लोग हमें जानेंगे, कितने हमारा सम्मान करेंगे, हमारा समाज में नाम होगा या नहीं होगा। इन सारे झंझटों से हम मुक्त होते हैं। इसीलिए बोझ नहीं होता और हम बड़े हल्के-हल्के महसूस करते हैं। यदि हम अपने बचपन में थोड़ा वापस लौटकर देखें तो हम भी यही पायेंगे कि बचपन सुंदर था क्योंकि हम स्वतंत्र थे, क्योंकि मन शांत था, क्योंकि विचारों का, सपनों का तूफान नहीं चलता था। लेकिन इन सारे अवलोकनों की जड़ में जो उत्तर है वो यह है कि बचपन में हम वर्तमान में होते हैं। हर एक बच्चा वर्तमान में जीता है। उसे अतीत की चिंताएँ और भविष्य के सपने नहीं घेरते। वह जो अब है ही नहीं और वह जो अभी है ही नहीं इन दोनों से मुक्त होता है। क्या कर लिया है और क्या करूँगा? बच्चा यह नहीं सोचता। जो चला गया है उसका शोक नहीं है और जो आने वाला है उसकी उत्तेजना नहीं है। यह वर्तमान ही हमारे सारे सुखों का स्रोत है। और एक बच्चा स्वतः ही वर्तमान में जीता है। दरअसल, अतीत और भविष्य एक बच्चे की चेतना के हिस्से नहीं होते। उसकी दौड़ न आगे है और न पीछे है। वह केवल और केवल अभी और यहीं जीता है। एक बच्चे में जो चहक और चमक होती है, जो जीवन की ललक होती है वह इस बात की है कि उसकी ऊर्जा न तो अतीत में व्यर्थ हो रही है और न भविष्य में व्यर्थ हो रही है। संग्रहित है उसकी ऊर्जा, अभी और यहीं, इस क्षण में। यह संग्रहित ऊर्जा उसके पूरे व्यक्तित्व को रोशन कर देती है। उसकी मुस्कान में, उसके चलने में, दौड़ने में, उठने में, बैठने में, बातों में एक रोशनी आ जाती है। लेकिन जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं हम वर्तमान से हटते जाते हैं। यदि आज आप थोड़ा देर के लिए यह चिंतन करें कि सुबह से लेकर अभी तक आपने कितना समय वर्तमान में जिया है तो आपको आश्चर्य होगा कि आप लगभग कभी भी वर्तमान में थे ही नहीं। पूरे वक्त सपनों में, पूरे वक्त यादों में डूबे रहने

से ऊर्जा का द्वास होता है। इसीलिए जैसे-जैसे हम बड़े होते जाते हैं हमारे चेहरे से वह चमक मिटती जाती है। जीसस ने कहा है कि, “जब तक आप बच्चों जैसे नहीं हो जाते तब तक आप परमात्मा के राज्य में कभी प्रवेश नहीं कर सकते। स्वर्ग का राज्य केवल उन लोगों के लिए है जो बच्चों जैसे हैं।” बच्चे बन जाने का अर्थ सीधा-सा है कि अभी और यहीं जीना सीख लेना। जब हम संतुष्ट होते हैं पूर्णरूपेण, एक भी इच्छा नहीं होती, सारी इच्छाएं समाप्त हो जाती हैं, तब अचानक हम देखते हैं कि अंदर गहन शांति है, गहन मौन है। यह मौन ही वह चीज है जो बचपन में हम जीते रहे हैं। हममें से ज्यादातर लोगों को यह नहीं पता कि वह शांति कहाँ से आई है। इसीलिए हम बार-बार बचपन को याद करते हैं। हमें ऐसा लगता है कि यदि मौका मिल जाए तो हम फिर बचपन में लौटना चाहेंगे। इसके अलावा, हम जितना मृत्यु के पास पहुँचते जाते हैं उतना बचपन के प्रति खिंचाव बढ़ता जाता है। लियो टॉल्सटॉय का एक उपन्यास है “द डेथ ऑफ इवान इलिव” “जब इवान मृत्युशय्या पर होता है, अकेला। उसके आस-पास उसके प्रेमी, शुभचिंतक नहीं होते, तब वह बचपन की यादों में डूब जाता है। बार-बार उन दिनों को याद करता है जब वह छोटा था, स्कूल में पढ़ता था। कितना उन्मुक्त जीवन था उसका, चिंताओं से अलग, सहज, स्वतः बहता हुआ जीवन!” हम सभी कभी-न-कभी बचपन में वापस लौटना चाहते हैं ताकि उस मौन को फिर चख सकें।

मृत्यु के क्षण यह लालसा और तीव्र इसीलिए होती है क्योंकि समय फिसलता हुआ लगता है इसीलिए याद रखिए जो अपने बचपन को फिर से जीना चाहता है, उसे वापस बच्चा बनने की आवश्यकता नहीं है और होना चाहे भी तो भी नहीं हो सकता। अस्तित्व ने ऐसी व्यवस्था ही नहीं की कि हम बाल्यावस्था में लौट जाएँ। क्यों ? क्योंकि उसकी कोई जरूरत ही नहीं है। जो कुछ बचपन में हमें मिल रहा था वह अभी भी मिल सकता है। वह किसी भी उम्र में मिल सकता है— युवावस्था में, अधेड़ उम्र में, वृद्धावस्था में, किसी भी उम्र में वह मौन, वह शांति हम पा सकते हैं। और जो वर्तमान में रहने की कला जान ले फिर वह किसी भी उम्र में बच्चा ही बना रहता है। नासमझ नहीं, बचकाना नहीं, बच्चे जैसा। अतः बालपन के आनंद की प्यास को तृप्त करने का केवल एक ही साधन है— अभी और यहीं जीना। उम्र के एक पड़ाव पर हम खुद को बड़ा महसूस करने लगते हैं और यहीं से हमारी परेशानियाँ शुरू हो जाती हैं। अगर खुद में अपने बचपन को हम जिंदा रखेंगे तो उलझने चुटकी बजाते ही सुलझ जाएंगी।

“बहुत गुस्ताखियाँ कर दी,
वक्त तूने हमारे साथ।
बड़ा क्यूँ कर दिया इतना,
जहाँ तू ही नहीं है हमारे पास।।
कभी सोचा नहीं था,
दर्द इतना है इन खुशियों में।
नहीं तो माँगते न हम कभी इनको दुआओं में।।”



संघ की राजभाषा हिंदी की लिपि देवनागरी एवं अंक अन्तरराष्ट्रीय हैं—
संवैधानिक अनुच्छेद 343।

- ◆ 14 सितम्बर को हिंदी दिवस मनाया जाता है क्योंकि इसी दिन सन् 1949 को सर्वानुमति से हिंदी संघ की राजभाषा बनी।
- ◆ राजभाषा नियम 1976 में बनाए गए।

लेखकों की विविध लेखन कलाएँ

महिमानन्द भट्ट*



लेखन एक बहुत बड़ी विधा है। इस विधा को कला की संज्ञा भी दी जा सकती है। लेखक को कलाकार के साथ कलम का धनी भी कहा जा सकता है। लेखक की कलम में एक जादू होता है। जिसके बारे में एक बार हिटलर ने कहा था कि दुनिया की सबसे बड़ी ताकत कलम की ताकत है जिसका एक ही वार हजारों तलवारों की ताकत से कई गुणा अधिक होता है। किसी विषय या बात को पाठकों के समक्ष कलात्मक एवं रोचक ढंग से प्रस्तुत करना ही लेखक की योग्यता होती है।

विभिन्न विषयों पर लिखी पुस्तकों को पढ़कर लेखक की लेखन-क्षमता का अनुमान पाठक बड़ी आसानी से लगा सकता है। यह भी कहा जाता है कि लेखक तभी तक जिन्दा रहता है जब तक वह पाठकों को साथ लेकर चलता है अर्थात् उनकी रुचि के अनुरूप अपनी लेखन प्रतिभा को प्रदर्शित करता है। जिस दिन लेखक पाठकों से कटकर अलग-थलग पड़ जाता है उसी दिन से उसकी लेखन प्रतिभा भी नष्ट हो जाती है। अब तो विभिन्न विषयों के अलावा एक ही विषय पर अनेकों पुस्तकें पढ़ने को मिल जाती है। लेखकों की लेखन प्रतिभा को देखते हुए यह विचार कई बार मन में उठता है कि ये लेखक कब और कैसे अर्थात् किस अवस्था में इतनी बड़ी पुस्तकों को लिख पाते हैं। लेखकों की लेखन पद्धति के बारे में कई तरह की बातें सुनने को मिलती हैं। कुछ लेखकों के बारे में सुना और पढ़ा भी है कि वे बैठकर तो लिख ही नहीं पाते। यह बात शायद ही किसी ने साक्षात् रूप से देखी होगी, किंतु पुस्तकों में पढ़कर यह बात सही प्रतीत होती है।

एक प्रसिद्ध समाचार-पत्र के वरिष्ठ संपादक के साथ विद्यार्थी जीवन के दौरान मुझे काम करने का सौभाग्य मिला तो मैंने देखा कि वे संपादक महोदय सुबह स्नान और नाश्ता करने के बाद सोफे पर बैठकर बड़े-बड़े लेख कुछ ही समय में डिक्टेट करवा देते थे क्योंकि वृद्धावस्था के कारण उन्हें लिखने में कठिनाई होती थी। मुझे हैरानी होती थी कि अखबारों में छपने वाले इतने बड़े-बड़े लेख और उनमें दी गई जानकारी/प्रसंग/घटनाएँ आदि वे कैसे याद रख लेते हैं और जनता तक सम-सामयिक विषयों पर अपना लेख पहुँचाने में अपनी लेखनी का जिस प्रकार वे प्रयोग करते हैं इसे वास्तव में एक कला ही कहा जा सकता है।

प्रसिद्ध उपन्यासकार "शरतचन्द्र" का नाम तो काफी पाठक जानते होंगे। उनके बारे में यह कहा जाता है कि वे आराम कुर्सी पर अधलेटी हालत में बैठकर ही लिखना पसन्द करते थे और बाद में उनकी यह आदत बन गई। कुछ लेखकों को रात के समय लिखने की आदत होती है। हो सकता है रात का समय शांत और बाधारहित होने के कारण ऐसे लेखकों को भाता होगा। महान फ्रांसिसी 'बालजाक' के बारे में कहा जाता है कि वे शाम को सोते थे और आधी रात को उठकर लिखने बैठ जाते। बड़ी अजीब बात है कि कुछ लेखक न तो बैठकर और न ही रात को उठकर लिखते हैं बल्कि खड़े होकर लिखते हैं।

"हैमिंग्वे" एक ऐसे लेखक हुए हैं जो खड़े होकर लिखा करते थे। उनके बारे में कहा जाता है कि पहले विश्व युद्ध में वे बुरी तरह जख्मी हो गए थे और उनकी रीढ़ की हड्डी में लगातार दर्द रहने लगा था। उन्होंने खड़े होकर लिखने के लिए एक ऊँची मेज बनवाई हुई थी। वे अधिकतर पेंसिल से लिखा करते थे पर जहां-जहां लेखन में ज्यादा संवाद होते थे, वे टाइपराइटर से लिखने लग जाते थे।

फ्रांस के महान क्रांतिकारी लेखक "विकतर ह्यूगो" को भी खड़े होकर लिखने की आदत थी। उनके बारे में जो कहा जाता है वह काफी रोचक है। लिखते-लिखते

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

जब उनका कागज भर जाता था तब वे उसे नीचे फर्श पर फेंक देते थे। आखिर में जब वे लिखना बंद करते, तब इन कागजों को उठाकर क्रमानुसार रखते थे। यही तरीका प्रसिद्ध पंजाबी उपन्यासकार “नानक” सिंह का भी था। एक अमरीकी लेखक हुए हैं “मार्क ट्रेवन” जिनके बारे में कहा जाता है कि उन्हें आँधे मुंह लेटकर लिखने की आदत थी। यदि वे बैठकर लिखने का प्रयास करते तो उन्हें नींद आने लगती थी।

हिंदी के जाने-माने लेखक “प्रेमचंद” ही एक ऐसे लेखक माने जाते हैं जो किसी भी अवस्था में, किसी भी समय और किसी भी स्थान पर लिख सकते थे अर्थात् कागज, कलम, मेज-कुर्सी, सर्दी-गर्मी आदि कोई भी चीज उनके लेखन के रास्ते में रुकावट नहीं बनती थी। वे अपने लेखन की धुन के पक्के थे। गुरुदेव रविन्द्रनाथ ठाकुर के बाद प्रेमचंद ही ऐसे साहित्यकार हुए हैं जिन्हें देश से बाहर भी जाना जाता है तथा उनकी लेखन प्रतिभा और शैली से उन्हें “आधुनिक हिंदी कथा साहित्य का जनक”, “भारत का टॉलस्टाय” या “उपन्यास सम्राट” कहा जाता है।

लेखकों के लिखने के तरीकों के साथ-साथ उनकी अन्य पसंद भी होती है, जैसे पहनने के लिए कपड़े पसंद किए जाते हैं। उसी तरह कुछ लेखक लिखने के लिए भी विशेष रंग का कागज पसंद करते हैं अर्थात् कागज के रूप-रंग एवं उसके आकार आदि के बारे में कुछ लेखकों की खास पसंद होती है।

‘सिटवेल’ को तो कभी सफेद कागज रास नहीं आता था। वे हमेशा नीले रंग के कागजों पर लिखा करते थे। इस पर लिखने से उन्हें आनंद आता था। उनका यह भी मानना था कि नीला रंग आँखों को सुखद लगता है। इसके अलावा एक अन्य फ्रांसिसी लेखक “अलेक्जेंडर ड्यूमा” की धारणा थी कि सभी प्रकार की रचनाएं एक ही रंग के कागजों पर नहीं लिखनी चाहिए। उनकी नजर में उपन्यास आसमानी रंग के कागजों पर और अन्य रचनाएं गुलाबी रंग के कागजों पर लिखनी चाहिए। न रूप और न रंग, इसके अतिरिक्त छोटे आकार के कागजों पर लिखना भी लेखकों की रुचि रही है। “चेस्टरटन” जो अंग्रेजी लेखक और आलोचक थे, वे पोस्टकार्ड के आकार के कागजों पर लिखा करते थे। बड़े आकार के कागजों पर लिखने से उन्हें डर जैसा लगता था लेकिन हिंदी लेखक “रांगेय राघव” को फुलस्केप आकार का कागज भी बहुत

छोटा पड़ता था। वे उससे भी चार गुणा बड़े आकार के कागज पर लिखते थे और वह भी बहुत ही बारीक। वे बड़े आकार के कागज पर इतना छोटा



लिखते थे जैसे मानों उन्हें डर लग रहा हो कि कहीं उनके लेखन से कागज जल्दी भर न जाए। वे एक कागज पर दस-दस, बारह-बारह फुलस्केप कागजों जितना मैटर लिख लेते थे।

कुछ लेखकों को तो एकाग्रता एवं सुव्यवस्थित ढंग ही पसंद आता है। पंजाबी के सर्वश्रेष्ठ साहित्यकार “गुरुबख्शा सिंह” को अस्त-व्यस्तता बिल्कुल पसंद नहीं थी। वे सुबह नहा-धोकर पूरी तरह सज-संवरकर अपनी मेज पर जाकर बैठ जाते थे। उनके आस-पास पुस्तकें, कागज आदि हर चीज बड़े ही सलीके से रखी होती थी। यहाँ तक कि कमरे में चारों तरफ किसी भी तरह की गड़बड़ी नजर नहीं आती थी। “गुरुबख्शा” के लेख का रफ ड्राफ्ट भी कांट-छांट के बावजूद बहुत साफ और सुंदर होता था। कुछ लेखकों को लेखन में किसी प्रकार की बाधा नहीं होती, वे संगीत सुनते-सुनते भी लेखन का कार्य कर लेते हैं और इसमें उन्हें मजा भी आता है।

इसमें कोई संकोच नहीं कि लेखकों की दुनिया आम दुनिया से अलग होती है। लेखन उनकी आत्मा की आवाज होती है। जिसे उन्होंने अपने लाखों-हजारों पाठकों तक पहुंचाना होता है। पाठकों के दिल-दिमाग में अपनी जगह बनाने के लिए लेखक को गहन सोच-विचार करना होता है। वे वर्तमान में जीते हैं और भविष्य की सोचते हैं क्योंकि उनका लेखन भविष्य की धरोहर भी होती है। अपनी रुचि और मेहनत के आधार पर वे ऐसी साहित्य रचना करते हैं जिसके लिए वे लोकप्रिय हो जाते हैं और उनका साहित्य भी अमर हो जाता है। कलम के धनी होने के कारण ही वे अपने लेखन के माध्यम से जनमानस पर अमिट छाप छोड़कर जग-प्रसिद्ध हो जाते हैं और पीढ़ियाँ तो उन्हें याद करती ही रहती हैं।



निगम के क्षेत्रीय कार्यालय-एक परिचय

इस पत्रिका के पाठकों को क्षेत्रीय कार्यालयों की कार्य विधि एवं इनके अधीन वेअरहाउसों तथा अन्य कार्यकलापों की जानकारी देने के लिए संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया जाता है। पिछले अंकों में क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद, लखनऊ, भोपाल, हैदराबाद, जयपुर, गुवाहाटी, दिल्ली और भुवनेश्वर का संक्षिप्त परिचय दिया गया था। इस अंक में जानिये हमारे क्षेत्रीय कार्यालय- रायपुर और कोलकाता के बारे में।

● क्षेत्रीय कार्यालय-रायपुर ●

केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय – रायपुर की स्थापना 11 जुलाई, 2011 को हुई।

वर्तमान में छत्तीसगढ़ राज्य के अंतर्गत कुल 13 भंडारगृह हैं। इन भंडारगृहों की भंडारण क्षमता एवं उपयोगिता निम्नलिखित है :-

| क्र. सं. | भंडारगृह का नाम | क्षमता | उपयोगिता |
|----------|------------------|--------|----------|
| 1. | रायपुर – I | 13000 | 9880 |
| 2. | रायपुर – II | 8800 | 5984 |
| 3. | रायपुर – III | 15000 | 11700 |
| 4. | रायपुर – IV | 20000 | 10200 |
| 5. | भाटापारा – V | 23400 | 21996 |
| 6. | भाटापारा – VI | 28900 | 14161 |
| 7. | बिलासपुर – I | 28000 | 18200 |
| 8. | बिलासपुर – II | 38350 | 26845 |
| 9. | खरसिया | 14829 | 15867 |
| | खरसिया (वा.उ.आ.) | 3500 | 3990 |
| 10. | रायगढ़ – I | 11300 | 12769 |
| 11. | रायगढ़ – II | 32000 | 31040 |
| 12. | सुरी (वा.उ.आ.) | 3404 | 3812 |
| 13. | धमतरी | 10000 | 10000 |

* उक्त विवरण जनवरी 2018 तक का है।

श्रम शक्ति

माह जनवरी 2018 तक छत्तीसगढ़ क्षेत्र में श्रमशक्ति का विवरण निम्न प्रकार है :-



| इकाई | समूह | | | | |
|--------------------|------|----|----|----|-----|
| | अ | ब | स | द | योग |
| क्षेत्रीय कार्यालय | 05 | 06 | 08 | 01 | 20 |
| भंडारगृह | 03 | 10 | 42 | 08 | 63 |
| योग | 08 | 16 | 50 | 09 | 83 |

कीट नियंत्रक सेवाएं

कीट नियंत्रक सेवाओं के अंतर्गत वर्ष 2015-16 से 2016-17 तक कुल 2,03,188 लाख रु. अर्जित किए गए तथा वर्ष 2017-18 (जनवरी 2018 तक) 2,00,182 लाख रु अर्जित किए गए।

किसान विस्तार सेवा योजना

किसान विस्तार सेवा योजना के अंतर्गत वर्ष 2015-16 से 2016-17 तक विभिन्न केन्द्रों पर किसान प्रशिक्षण शिविर लगाकर कुल 1,215 किसानों को प्रशिक्षित किया गया। वर्ष 2017-18 (जनवरी, 2018 तक) 760 किसानों को प्रशिक्षित किया गया।

राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी विवरण

- ◆ केन्द्रीय भंडारण निगम, क्षेत्रीय कार्यालय – रायपुर में प्रत्येक तिमाही में एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया जाता है तथा दिनांक 03.11.2017 को निगमित कार्यालय से श्रीमती नम्रता बजाज, प्रबंधक (राजभाषा) एवं श्री महिमानंद भट्ट, वरिष्ठ सहायक प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा राजभाषा निरीक्षण एवं पॉवर पॉइंट के माध्यम से अभ्यास आधारित हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया।
- ◆ प्रत्येक तिमाही में राजभाषा कार्यान्वयन समिति की बैठक का आयोजन किया जाता है।
- ◆ प्रत्येक वर्ष सितम्बर माह में हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया जाता है, जिसके अंतर्गत हिंदी के

प्रचार-प्रसार हेतु विभिन्न हिंदी प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है।

- ◆ केन्द्रीय भंडारण निगम-क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर नराकास का सदस्य है तथा नराकास द्वारा आयोजित छमाही बैठकों में नियमित रूप से भाग लिया जाता है।

अन्य विशेष गतिविधियाँ

- ◆ दिनांक 15 सितम्बर से 02 अक्टूबर, 2017 तक क्षेत्रीय कार्यालय रायपुर द्वारा "स्वच्छता पखवाड़ा" मनाया गया जिसमें सभी कार्मिकों ने स्वच्छता की शपथ ली और केन्द्रीय भंडारगृह, रायपुर-IV में श्रम-दान कार्यक्रम किया गया।
- ◆ 30 अक्टूबर से 04 नवम्बर, 2017 तक सतर्कता जागरूकता सप्ताह मनाया गया।

● क्षेत्रीय कार्यालय-कोलकाता ●

केन्द्रीय भंडारण निगम क्षेत्रीय कार्यालय-कोलकाता की स्थापना दिनांक वर्ष 1966 को हुई, जो कारवां कुछ भंडारगृहों के साथ आरम्भ हुआ था।

केन्द्रीय भंडारण निगम, कोलकाता क्षेत्र द्वारा अपनी क्षमता को निरंतर बढ़ाया गया है, जिसके कारण वर्तमान में कोलकाता क्षेत्र में 23 भंडारगृहों, 01 आईसीपी पेट्रापोल और 02 सीएफएस कोलकाता और सीएफएस हल्दिया के रूप में विस्तारित हुआ।

क्षेत्रीय कार्यालय-कोलकाता की कुल क्षमता 7,82,009 मीट्रिक टन है। अपने प्रारम्भिक वर्षों यह क्षेत्र मुख्य रूप से एफसीआई और स्टेट खाद्य कंट्रोलर पर ही निर्भर था। बाद के दशक में बॉडेड भंडारगृहों, डेडिकेटेड भंडारगृहों सीएफएस कोलकाता और एलपीआई पेट्रापोल के आगमन से इस क्षेत्र की आय और मुनाफे को बढ़ावा मिला।

सीएफएस कोलकाता के आरम्भ होने से इस क्षेत्र के राजस्व में भारी वृद्धि हुई।

औद्योगिक भंडारण ने कोलकाता क्षेत्र को नया आयाम दिया। प्रतिष्ठित कंपनियां जैसे एमएमटीसी, बर्जर पेंट्स, नेरोलक पेंट्स, एनसीइआरटी, आईओसी,

कोकाकोला, चन्द्र परिवहन आदि ने पनिहती, बोन्हुल्ली, रानीनगर और इम्पोर्ट एक्सपोर्ट भंडारगृहों का उपयोग शुरू कर संगठन के लिए राजस्व जुटाने में काफी योगदान दिया। यह क्षेत्र औद्योगिक भंडारण हेतु हमेशा से अपनी भंडारण क्षमता के लिए भारी संख्या में घरेलू और प्रतिष्ठित कंपनियां की मांग रहा है।

भंडारगृहों/सीएफएस/एलपीआई की संख्या और उनकी भंडारण क्षमता

वर्तमान में क्षेत्रीय कार्यालय-कोलकाता में कुल 23 भंडारगृह, 02 सीएफएस और 01 एलपीआई केन्द्र का



परिचालन किया जा रहा है। जिनका विवरण इस प्रकार है : (31.01.2018 की स्थिति के अनुसार)

भंडारगृहों/सीएफएस/आईसीपी की संख्या और उनकी भंडारण क्षमता

| क्रम संख्या | भंडारगृह का नाम | भंडारण की क्षमता (मीट्रिक टन में) |
|-------------|--------------------|-----------------------------------|
| 1. | बेलदा | 5645 |
| 2. | बेरहम्पोरे | 31600 |
| 3. | बिशनपुर | 16000 |
| 4. | बोन्हूघली | 31160 |
| 5. | बर्दवान | 22088 |
| 6. | सीएफएस कोलकाता | 50480 |
| 7. | सी के रोड | 31600 |
| 8. | कुचबेहार | 6460 |
| 9. | दुर्गाचक | 32400 |
| 10. | फलता | 2000 |
| 11. | सीएफएस हल्दिया | 15000 |
| 12. | इम्पोर्ट-एक्सपोर्ट | 43902 |
| 13. | कन्तापुकुर | 25151 |
| 14. | खरगपुर | 32600 |
| 15. | मालदा | 17400 |
| 16. | मोगरा | 11500 |
| 17. | पंचपारा | 25120 |
| 18. | पानिहती | 39876 |
| 19. | रानीनगर | 20000 |
| 20. | सरगाची | 17400 |
| 21. | सरुल | 26700 |
| 22. | मातिगारा | 5000 |
| 23. | एस बी रोड | 6092 |
| 24. | आईसीपी पेट्रापोल | 221487 |
| 25. | टी टी रोड | 9008 |
| 26. | उलूबेरिया | 37590 |

किसान विस्तार सेवा योजना (एफईएसएस)

केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा वर्ष 1978-79 से अपने निगमित सामाजिक दायित्व के एक भाग के रूप में किसान विस्तार सेवा योजना (एफईएसएस) चलाई जा



रही है। इस योजना के अधीन तकनीकी कर्मचारी भंडारगृहों के आस-पास के गाँवों का दौरा करके किसानों को वैज्ञानिक भंडारण और फार्म स्तर पर खाद्यानों के परिक्षण तकनीकों में प्रशिक्षण प्रदान करने सहित हानिकारक कीटों और कृंतकों के नियंत्रण, छिड़काव तथा प्रद्युमन आदि विधियों के प्रदर्शन के साथ किसानों एवं जन साधारण को भंडारगृहों के लाभ के बारे में बताते हैं। क्षेत्रीय कार्यालय-कोलकाता द्वारा इस योजना के अंतर्गत वर्ष 2017-18 में तकनीकी कर्मचारियों द्वारा कुल 181 गाँवों का दौरा कर 6,165 किसानों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया। (31.01.2018 की स्थिति के अनुसार)

पेस्ट नियंत्रण सेवा

केंद्रीय भंडारण निगम द्वारा वर्ष 1968 से किसानों ट्रेडर्स, निर्यातकर्ताओं, आयातकर्ताओं तथा शिपिंग एजेंट आदि के हितों के लिए पेस्ट नियंत्रण सेवा प्रदान कर रहा है। ये सेवाए रेलवे कोच, आवासीय परिसरों, लाइब्रेरी, हवाई जहाजों, अस्पतालों, जहाजों और निर्यात किये जाने वाले कंटेनरों में दी जाती हैं। इसी प्रकार इस क्षेत्र ने वर्ष 2017-18 में कीटनाशन सेवा द्वारा 74.99 लाख रु. का राजस्व अर्जित किया गया है। (31.01.2018 की स्थिति के अनुसार)

इस के अलावा क्षेत्रीय कार्यालय-कोलकाता में विगत वर्षों में कई ट्रेनिंग जैसे ट्रेड समिट, सतर्कता जागरूकता, पेस्ट नियंत्रण सेवा, हिन्दी दिवस, विश्व खाद्य दिवस आदि कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता अपनी भंडारण गतिविधियों को क्षेत्र में बढ़ाने के लिए सदैव प्रयत्नशील है।

सुबह जल्दी क्यों उठें

राम अवतार प्रसाद*



मनुष्य शरीर पांच तत्वों से बना है - 1 आकाश तत्व, 2- वायु तत्व, 3- जल तत्व, 4- अग्नि तत्व, 5- पृथ्वी तत्व। इसमें किसी एक तत्व

की कमी होने से शरीर अस्वस्थ हो जाता है। फिर भी इन पाँचों तत्वों में वायु तत्व को छोड़कर बाकी तत्वों के बिना प्राणी कुछ समय तक जीवित रह सकता है, परन्तु वायु तत्व के बिना एक पल भी जिन्दा नहीं रह सकता। इसलिए वायु तत्व को प्राण वायु अथवा प्राण कहा गया है। यह वायु मनुष्य का सबसे जरूरी भोजन है।

हम अच्छे स्वास्थ्य की कामना करते तो हैं, धनी लोग बादाम, दूध-घी, बढ़िया से बढ़िया विटामिन टॉनिक भी लेते हैं परन्तु स्वास्थ्य सुधरने की बजाय गिरता जाता है। क्योंकि अच्छा स्वास्थ्य होने का मतलब है हम जो खाते हैं, वह हजम हो जाये। इसके लिए पाचन-शक्ति मजबूत हो, लीवर ठीक काम करे। शरीर की नसों-नाड़ियों में शुद्ध रक्त हो, उसके लिए फेफड़े स्वस्थ होने अति आवश्यक हैं।

यह सब तभी होगा जब वायु तत्व जो सांसों द्वारा ग्रहण किया जाता है, वह शुद्ध हो। मानव हर वस्तु जो बाजार से खरीदता है शुद्ध ही ढूँढता है, चाहे वह ढूँढने पर न मिले। परन्तु शुद्ध वायु जो मुफ्त में हमें मिलती है उसके लिए प्रयत्न नहीं करता। सुबह-सवेरे बिस्तर छोड़ना नहीं चाहता। प्रातः काल में खुले वातावरण में हमें शुद्ध वायु मिलती है। जहाँ छतें तथा दीवारें न हों। घर से दूर चले जाएं। पार्को में जाएं, जहाँ पेड़-पौधों से हमें प्रचुर मात्रा में प्राण-शक्ति, शुद्ध वायु, ऑक्सीजन मुफ्त में मिलती है।

शरीर को सबसे ज्यादा शक्ति देने वाला भोजन शुद्ध वायु है, जिसमें O_1 - O_2 - O_3 तत्व होता है। ऑक्सीजन लेने का उत्तम तरीका है, गहरे एवं लम्बे श्वासों का अभ्यास। यह एक यौगिक क्रिया है जिसे प्राणायाम नाम दिया है महर्षियों ने। लगभग हर शहर के पार्को में भारतीय योग संस्थान इस कार्य में प्रशंसनीय भूमिका निभा रहा है। सुबह-सवेरे निःशुल्क योगाभ्यास कराया जा रहा है। साधारणतः हर दिन, हर रात, हर पल हम सांस लेते रहते हैं, परन्तु उसमें ऑक्सीजन की

मात्रा कम होती है एवं सांस भी छोटे होते हैं। बिना किसी प्रकट कारण के भी अस्वस्थ महसूस करते हैं।

अतः सूर्योदय से पहले हमें इसी वायु का भोजन करना चाहिए, जो गहरे व लम्बे श्वासों से होता है। प्राण वायु सुन्दर भोजन है एवं शरीर को स्वस्थ करने वाली सुन्दर औषधि है जिसे हम मुफ्त में पाते हैं।

कहावत है-

उठ जाग मुसाफिर भोर भई, अब रैन कहाँ, जो सोवत है।
जो सोवत है, सो खोवत है, जो जागत है, सो पावत है।।

रात्रि के आखिरी पहर में दौलत लुट रही होती है। ज्ञानी मनुष्य इस दौलत को लूटने सुबह-सवेरे चार बजे उठकर खुले मैदानों में पार्को में चले जाते हैं। सूर्योदय के बाद जो उठते हैं, वे इस दौलत से वंचित रह जाते हैं। सूर्य उदय होकर चारों ओर के वातावरण से प्राणवायु खींचना शुरू कर देता है। वायु में ऑक्सीजन की मात्रा कम होने लगती है और सूर्योदय के पश्चात जो वायु तत्व रूपी भोजन मिलता है वह केवल जीवित रहने भर के लिए है, अच्छे स्वास्थ्य के लिए नहीं है। इसी कारण हमारे फेफड़े कमजोर हो जाते हैं। रक्त शुद्ध नहीं हो पाता। अशुद्ध रक्त को शुद्ध करने में हार्ट कमजोर हो जाता है। परिणामतः शरीर में आलस्य आ जाता है। घर पर भी खिड़कियाँ खोलने पर शुद्ध वायु का झोंका आता है। शुद्ध वायु के सेवन से दिमागी ताकत बढ़ती है, आँखों की रोशनी बढ़ती है, मनुष्य की सोच में से विकार हट जाते हैं और शुद्ध विचार आते हैं। जो घर एवं समाज को व्यवस्थित करने के लिए जरूरी हैं। इस तरह जिस वायु तत्व के बिना हम कुछ मिनट भी जिन्दा नहीं रह सकते और जिस शुद्ध वायु से सम्पूर्ण शरीर पुष्ट हो जाता है तथा शारीरिक, मानसिक, एवं सर्व प्रकार के रोग दूर भाग जाते हैं, उसे क्यों न सुबह-सवेरे मुफ्त में ग्रहण करें। आज से सुबह 4 बजे उठकर निकल जाएं। देखेंगे कि सारा दिन कितनी फुर्ती तथा हंसी-खुशी में गुजरता है। फिर किसी डॉक्टर की जरूरत भी नहीं पड़ती।

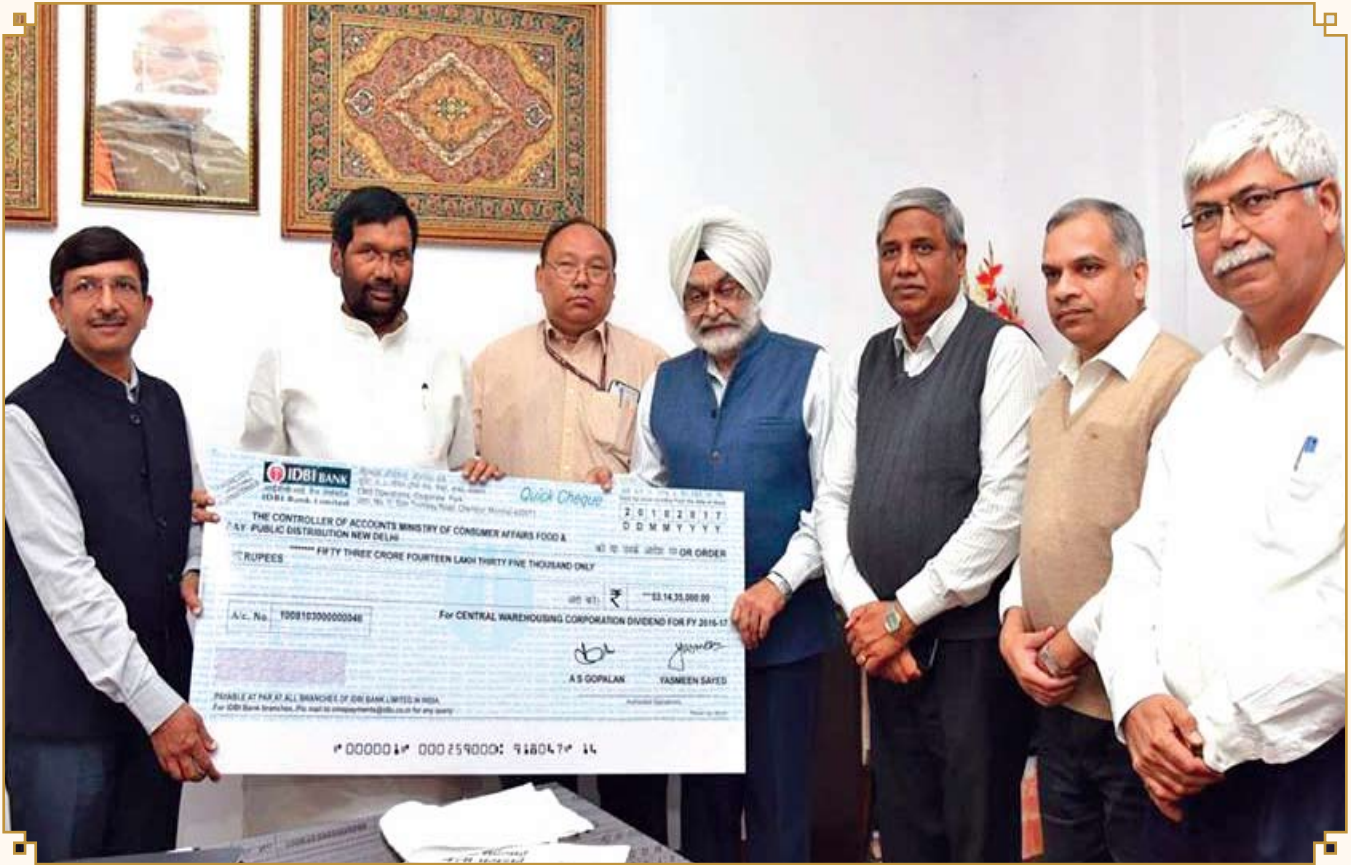
हमेशा मुस्कराते रहें,
बिंदास मुस्कुराओ क्या गम है,
जिन्दगी में टेंशन किसको कम है,
अच्छा या बुरा तो केवल भ्रम है,
जिन्दगी का नाम ही,
कभी खुशी : कभी गम है।

* वेअरहाउस प्रबंधक, सीएफएस, कांडला पोर्ट, क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद

निगम की वार्षिक साधारण बैठक की झलकियां



निगमित कार्यालय द्वारा मंत्रालय को लाभांश का चैक प्रदत्त



बिजनेस एक्सीलेंस एंड इनोवेशन बैस्ट प्रैक्टिसिस- एकाडमिया अवार्ड

नई दिल्ली इंस्टीट्यूट्स ऑफ मैनेजमेंट के स्थापना दिवस के दौरान केन्द्रीय भंडारण निगम के निदेशक (कार्मिक) श्री जे.एस.कौशल ने "बिजनेस एक्सीलेंस एंड इनोवेशन बैस्ट प्रैक्टिसिस-एकाडमिया अवार्ड"-2017 प्राप्त किया। श्री के. कस्तूरीरंगन, पूर्व प्रमुख इसरो तथा अध्यक्ष, राष्ट्रीय शिक्षा नीति समिति ने दिनांक 16.10.2017 को नई दिल्ली में आयोजित समारोह में यह अवार्ड प्रदान किया।



निगमित कार्यालय तथा क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद को मंत्रालय द्वारा राजभाषा पुरस्कार



माननीय मंत्री महोदय एवं राज्यमंत्री महोदय से निगमित कार्यालय को वर्ष 2016-17 का द्वितीय पुरस्कार तथा क्षेत्रीय कार्यालय, अहमदाबाद को विशेष पुरस्कार प्रदत्त

निगमित कार्यालय में वार्षिक मूल्यांकन रिपोर्ट का ऑन-लाइन शुभारंभ



निगमित कार्यालय में सतर्कता जागरूकता सप्ताह का आयोजन



निगमित कार्यालय में हिंदी पखवाड़े के दौरान काव्य प्रतियोगिता



निगमित कार्यालय में राजभाषा पुरस्कार वितरण समारोह की झलकियां



नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में निगमित कार्यालय द्वारा कहानी पूरी करो प्रतियोगिता का आयोजन



निगमित कार्यालय में हिंदी कार्यशाला के आयोजन की झलकियाँ



निगमित सामाजिक दायित्व के कार्य



निगमित कार्यालय में आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा



क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़ा एवं कार्यशाला



क्षेत्रीय कार्यालयों में आयोजित हिंदी पखवाड़ा एवं कार्यशाला



क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद के अधीनस्थ वेअरहाउसों में किसान प्रशिक्षण कार्यक्रम की झलकियां

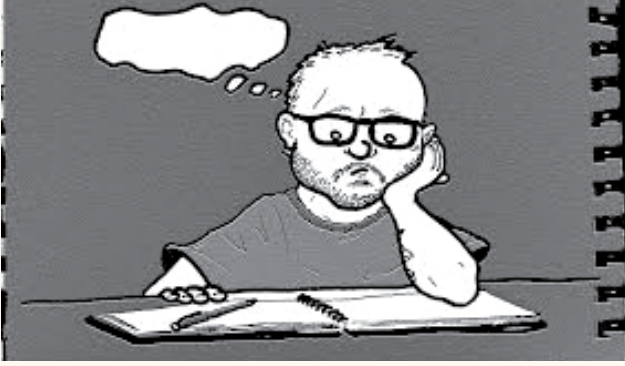


नरकास द्वारा क्षेत्रीय कार्यालयों को पुरस्कार



क्षेत्रीय कार्यालय, हैदराबाद को उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन में प्रथम पुरस्कार प्रदत्त

क्षेत्रीय कार्यालय, गुवाहाटी को राजभाषा कार्यान्वयन में सराहनीय कार्यनिष्पादन हेतु प्रशस्ति पत्र



केंद्रीय भंडारण निगम में आजकल सेवानिवृत्ति का दौर चल रहा है। अधिकारी/कर्मचारी जिन्होंने 60 वर्ष की अवस्था प्राप्त कर ली है, निर्धारित तिथि पर उनकी सेवानिवृत्ति होना एक सामान्य प्रक्रिया है। इस सामान्य प्रक्रिया में यह देखने को मिलता है कि सेवानिवृत्ति के समय जिनके पारिवारिक दायित्व पूर्ण हो गये हैं उनके मुख मण्डल पर सन्तोष के भाव होते हैं। इसके बावजूद कुछ साथी यह कहते सुने गये कि सेवानिवृत्ति के बाद क्या करें ? प्रातः 10 बजे से 6 बजे के अन्तराल के समय का उपयोग कैसे करेंगे ?

अधिकारी/कर्मचारी जिनके पारिवारिक उत्तरदायित्वपूर्ण नहीं हो पाये, उनके मुखमण्डल पर असंतोष के भाव होते हैं तथा पारिवारिक दायित्वों के निर्वाहन में सेवानिवृत्ति के बाद पेन्शन की छोटी राशि मिलना एक तनाव का कारण बन सकता है क्योंकि आश्रित/नासमझ आश्रितों द्वारा सेवानिवृत्त पिता से एक मुश्त प्राप्त धनराशि, किसी न किसी बहाने पारिवारिक/सामाजिक कार्यों में खर्च करा ली जाती है, फिर उनको शेष जीवन आर्थिक कठिनाइयों में गुजारना पड़ता है। संसार में कभी-कभी अनुकूल परिस्थितियाँ नहीं मिल पाती हैं परन्तु उसमें भी जो संतोष कर सके तो यकीन मानिये कि उसे जीने की कला आ गयी।

साथियों, जीवन की शुरुआत हम सभी बड़े उत्साह से करते हैं। जीवन यात्रा में हम सभी को अनेक प्रकार

के अनुभव होते हैं जो हम सभी के लिये मार्गदर्शक का कार्य करते हैं। जीवन संचालन हेतु हम सभी को बहुत सा ज्ञान अपने माता-पिता, गुरुजनों, रिश्तेदारों तथा मित्रों से मिलता है तथा रोजगार/व्यवसाय संबंधी ज्ञान, स्कूल/कॉलेजों एवं व्यावसायिक संस्थानों से मिलता है। समेकित रूप से चिंतन करने पर यह अनुभव होता है कि सेवानिवृत्ति के समय प्राप्त धनराशि का उचित रूप से निवेश करने पर प्राप्त मासिक आय से जीवनचर्य संबंधी आर्थिक खर्चों की भरपाई की जा सकती है तथा आश्रितों को भी विवेकानुसार समझाया जा सकता है एवं शेष जीवन आसानी से व्यतीत किया जा सकता है।

यहां यह विचारणीय है कि जन्म से लेकर रोजगार पाने तक हम सभी भविष्य बनाने की प्रतिस्पर्धा में सामाजिक कार्य नहीं कर पाते हैं। हम सभी यह जानते हैं कि मानव जन्म होने के बाद माता-पिता द्वारा पालन-पोषण करते समय, हमें बहुत से प्राकृतिक साधन (पेड़-पौधे, हवा, भूमि तथा जल आदि) संस्कार (माता-पिता/समाज से प्राप्त जीवन व्यवहार के नियम व्यवस्थाओं आदि का ज्ञान) स्वतः बिना मेहनत के प्राप्त हो जाते हैं। अतः सेवानिवृत्ति के बाद मुफ्त में प्राप्त साधन एवं संस्कार प्रकृति एवं समाज को लौटाने का समय शुरू होता है। जीवन के संघर्षों में हम स्वच्छ पर्यावरण बनाने में अपनी भूमिका नहीं निभा सके हैं, तो कुछ समय प्रकृति को प्रदान करें। अपने आसपास उपयुक्त स्थल पर पाँच पेड़ अवश्य लगायें, उसकी परवरिश तथा सुरक्षा स्वयं करें अथवा अपने संसाधनों से करवायें। पौधों के बीच आपको शान्ति एवं खुशी का अनुभव होगा।

जल संरक्षण के संबंध में शासकीय स्तर पर एवं अशासकीय कार्यालयों द्वारा अनेकों योजनायें चल रही हैं उनमें उचित भागीदारी प्राप्त कर उचित योगदान (शारीरिक, मानसिक एवं आर्थिक योगदान) दिया जा सकता है।

* भंडारण एवं निरीक्षण अधिकारी, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

यदि आप धार्मिक आस्थावान पुरुष/महिला हैं, तो यह समय आपके लिए स्वर्णिम समय है। ईश्वर समस्त रूपों में और सम्पूर्ण ब्रह्मांड में व्याप्त है। इस धरती का कोई भी कोना उसके पवित्र स्पर्श से अछूता नहीं है। अभी तक आप सांसारिक उत्तरदायित्वों का निर्वाह करते रहे। अतः यह समय शक्ति को पाने और आत्मसात् करने का उपयुक्त समय है। हिन्दू, मुस्लिम सिख एवं ईसाई आदि आप किसी भी धर्म के मानने वाले हैं। सभी धर्मों का सार/निचोड़ लगभग एक समान है। आप समाज में फँसे हुए अन्धविश्वासों/कुरीतियों को समाप्त करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं।

धनार्जन ही केवल जीवन का उद्देश्य नहीं होना चाहिए। धन जीवन को चलाने हेतु, साधन जुटाने का माध्यम हो सकता है, लेकिन धन से खुशियाँ नहीं खरीदी जा सकती हैं। भौतिक वस्तुएं जैसे महंगी कार, घड़ी, फ्लैट आदि खरीद कर पड़ोसियों एवं मित्रों के बीच सिर उठाकर बात की जा सकती है लेकिन इससे समाज में, रिश्तेदारों, शुभचिंतकों में परस्पर प्रेम नहीं बढ़ता है। ईर्ष्या और घृणा ही बढ़ती है जो सभी के लिए घातक है। जीवन का सच्चा सुख खुशियों को बाँटने में ही प्राप्त होता है। दूसरों की कठिनाइयों भरे समय में मदद करने से सम्मान और जीवन में आत्मिक और मानसिक सुख की अनुभूति होती है।

उम्र बढ़ने के साथ-साथ शारीरिक कमजोरी आने लगती है तथा वृद्धावस्था का आभास होना भी स्वाभाविक है। इस स्थिति में मन में विरक्ति आती है। जीवन भर जो संघर्ष किया, वह निरर्थक प्रतीत होता है। इस स्थिति से सकारात्मक सोच द्वारा बचा जा सकता है।

प्रातः एवं शाम को 3 से 5 कि.मी. तक अपनी शारीरिक क्षमता के अनुसार शुद्ध वातावरण, प्रकृति के करीब, बगीचों या पार्क में घूमने जाएं। इससे आपका पाचन तंत्र ठीक रहेगा, शरीर में कसावट आयेगी, भूख अच्छी लगेगी तथा रात में नींद भी अच्छी आएगी। यदि आपने जीवन में पैदल चलने/घूमने में कमी की है या अभ्यास नहीं है तो प्रारम्भ में घूमना/सैर करना

बोझिल लगेगा परन्तु आप दृढ़ इच्छाशक्ति से घूमना शुरू कीजिए। प्रारम्भ में एक-दो किलामीटर तक घूमना शुरू कीजिए, फिर धीरे-धीरे दूरी बढ़ाते जायें। आपको 30 दिन के अन्दर ही शारीरिक एवं मानसिक लाभ प्राप्त होने लगेंगे और घूमना/सैर करना आपकी आदत में शामिल हो जायेगा। इससे जीवन का तनाव समाप्त होगा तथा जीवन बोझ नहीं लगेगा।

प्रत्येक व्यक्ति में कुछ विशेषतायें होती हैं तथा सर्विस में भी आपने कुछ कार्यों में विशिष्ट योग्यता प्राप्त की है। अतः आप अपने समाज में, अपने निवास के आसपास या अन्य प्राइवेट संस्थान में अपने ज्ञान और अनुभव को निःस्वार्थ बाँट सकते हैं। आर्थिक रूप से गरीब बच्चों को शिक्षा दे सकते हैं। इस कार्य में 3-4 घंटे सार्थक रूप से व्यतीत हो सकते हैं। लाभान्वित पुरुष/महिलायें आपको बहुत सम्मान देंगे। आपके सुख-दुख का ध्यान रखेंगे। आपकी जीवन संध्या महक उठेगी तथा शेष जीवन खुशियों से भर जाएगा।

सकारात्मक सोच के साथ जीवन-संध्या खुशहाल रखी जा सकती है। जीवन की सार्थकता आखिरी सांस तक पूरी तल्लीनता से खुशहाली के साथ जीने में है। स्वास्थ्य का विशेष ध्यान रखना चाहिए तथा संतुलित भोजन समयानुसार लिया जाना चाहिए। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन एवं स्वस्थ विचारों का वास होता है।

एक गीत से आभार सहित ली गई इन पंक्तियों का मनन कीजिये और समय एवं माहौल के अनुसार गुनगुनायें।

फूल ऐसे भी हैं, जो खिले ही नहीं,
जिनके खिलने से पहले, फिजां खा गई।
जीव ऐसे भी हैं, जो जिये ही नहीं,
जिनके जीने से पहले ही मौत आ गई।
रोते-रोते जमाने में आये थे हम,
हँसते-हँसते जमाने से जाएंगे हम,
जिन्दगी को बहुत प्यार हमने किया,
मौत से भी मुहब्बत निभायेंगे हम।



बढ़ती हिंसा: जिम्मेदार कौन?

नम्रता बजाज*

सुबह-सुबह समाचार पत्र के पन्ने पलटिए और बस एक के बाद एक दुखदायी व भयावह समाचार देख लीजिए। आए दिन रोडरेज की खबरों ने मन को झिंझोड़ कर रख दिया है। रोजमर्रा के जीवन में, घर में, सड़कों पर, ऑफिस में, बाज़ार में, हर जगह कहीं न कहीं कोई ऐसा दृश्य देखने में आता है, जहाँ लोग बेइन्तहाँ गुस्से में भरे दिखाई देते हैं। एक खीज, चिढ़चिढ़ाहट के साथ कुछ भी कर देने को आतुर। न कुछ समझना, न समझाना, बस मारपीट पर उतर आना, लड़ना-झगड़ना। और नहीं तो अंत होता है एक-दूसरे को मार दिए जाने से। किसी को गुस्सा है कि नौकरी नहीं लगी तो किसी को प्रमोशन नहीं मिली। किसी को पति या पत्नी से तो किसी को अपने बॉस से नाराज़गी है। हर पल, हर जगह कोई न कोई कारण मौजूद है – खीज, गुस्सा या झुंझलाहट आने के लिए। कहीं किसी ओर कोई शांति नहीं है।

क्या किसी ने सोचा है कि यह खीज, यह गुस्सा किस लिए है। आज के दौर में जितनी सुविधाएं बढ़ती जा रही हैं, उतनी ही आदमी में हिंसा की भावना बढ़ती जा रही है और असंतुष्ट रहने की प्रवृत्ति भी। एक समय टी.वी. पर शाहरुख खान भी लोगों को यही सीख देते नज़र आते थे कि 'संतुष्ट मत रहो, "और विश करो।" पहले लोग सीख देते थे कि जो आपके पास है, उसमें ही संतुष्ट रहना सीखो। कहते हैं – प्रसन्न रहने के दो ही उपाय हैं— "आवश्यकताएँ कम करें और परिस्थितियों से तालमेल बिटाएं।" परन्तु आज के वातावरण में कोई भी व्यक्ति शायद प्रसन्न रहना जानता ही नहीं। पता नहीं किस फिक्र में दौड़े जा रहे हैं। एक व्यक्ति अपने किसी बीमार व्यक्ति की दवाई लेने जा रहा है और मोबाइल फोन पर किसी से इस विषय में बात कर रहा है। उसे पीछे से आ रहे मोटरसाइकल सवार का हार्न नहीं सुनाई दिया और बस यही उसकी मौत का कारण बना। इसके साथ ही वह ऐसे व्यक्ति के हाथों मारा गया जिसे इस बात पर गुस्सा आ गया कि उसने जो हार्न बजाया उसे क्यों नहीं सुना गया। क्या यह इतनी बड़ी

बात थी कि एक व्यक्ति को अपनी जान से हाथ धोना पड़ा।

पहले लोगों के मनोरंजन का साधन नाटक होते थे। वही नाटक दिखाए जाते थे जिनसे लोगों को सुकून मिले, उससे कुछ सीख मिल सके। उसके बाद फिल्में बनने लगीं उसमें भी धार्मिक, ऐतिहासिक प्रकार की फिल्में अधिक होती थीं। लोगों को मनोरंजन, सुकून और शांति के साथ-साथ कुछ सीखने को भी मिलता था। आज मनोरंजन के साधनों में टी.वी. भी शामिल हो गया है जो फिल्मों तथा नाटकों की अपेक्षा घर-घर में अपनी पहुँच बना चुका है और इसी कारण लोगों में इसका प्रभाव अत्यधिक दिखाई देता है। अगर कुछ अपवाद छोड़ दें तो जो धार्मिक सीरियल दिखाए जाएंगे उसमें भी देवी-देवताओं के ऐसे रूप दिखाए जाते हैं जो वास्तव में धर्म का मज़ाक ही उड़ाते हैं। लोगों की दृष्टि में न तो वह पूजनीय रह जाते हैं और न ही अनुकरणीय। अन्य पारिवारिक सीरियल की ओर देखें तो उनमें भी हिंसा, झगड़ा, झूठ, कपट, षड्यंत्र आदि की भरमार दिखाई देती है। कहीं बहन जायदाद के पीछे अपने भाई को मारने का षड्यंत्र रचती नज़र आती है तो कहीं माँ ही अपने बच्चों के बीच गलतफहमियाँ पैदा कर कलह करती नज़र आती हैं। कहीं बहु, बेटा, बेटी अपने माँ-बाप, अपने बड़ों को उनके नाम से पुकारते नज़र आते हैं। वास्तव में सभी सीरियल वही षड्यंत्र, लड़ाई-झगड़ा, अंधविश्वास, भूत-प्रेत परोसते नज़र आते हैं। आज भी इस भाग-दौड़ वाली जिंदगी में व्यक्ति घर पहुँचकर जब टी.वी. खोलता है तो तन, मन और



* प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

दिमाग को आराम पहुँचाना चाहता है। यदि वह समाचार खोलता है तो वहाँ उसे वहीं हिंसा देखने को मिलती है और यदि आप सीरियल चलाएँ तो वहाँ तो जो दिखाया जाता है, उसे देखकर दिमाग और भी तनाव में आ जाता है। फिल्मों में भी अश्लीलता, फूहड़ता, हिंसा आदि की ही भरमार अधिक मिलती है। एक-आध अपवाद को छोड़कर कहीं भी नैतिकता या सुकून से भरी कहानी दिखाई नहीं देती। पुराने गानों के अंतरों में भी सुकून मिलता था पर आज तो वह भी शोर-शराबे में परिवर्तित हो गया है। इन सभी से एक गुस्सा दिमाग में भर जाता है। कहीं अपने ऊपर बीती किसी बात का ध्यान आ जाता है। शायद यही गुस्सा, यही खीज अंदर ही अंदर जहर का काम करती है। एक तो तनाव भरी, भाग-दौड़ वाली जिंदगी, उस पर आस-पास का यह तनावभरा वातावरण। क्या यही सब तो जिम्मेदार नहीं है व्यक्ति में बढ़ती हुई हिंसा का?

आज के आधुनिक और सूचना प्रौद्योगिकी के युग में अनेकों माध्यम से हर वर्ग और आयु के लोगों तक नई-नई जानकारीयां पहुंच रही हैं। लोग और अधिक जिज्ञासु हुए हैं जो अच्छी बात है। पहले लोग बहुत-सी बीमारियों, उससे बचाव, समाज में विकसित हो रही नई सोच और उपकरणों से अंजान थे पर आज लोगों तक यह सब जानकारी देने के अनेक साधन हैं। मोबाइल और इंटरनेट तो हर घर की पहचान बन गया है जिससे पलक झपकते ही आपकी अपेक्षित जानकारी आपके सामने होती है। इससे हमें अनेकों लाभ हुए हैं परंतु इसका नुकसान यही हुआ है कि आज का इंसान धीरे-धीरे संवेदना शून्य होता जा रहा है। बच्चों का

बचपन उनसे छिनता जा रहा है। आपसी प्रेम-प्यार में कहीं कोई अंतर आ गया है। मनुष्य सामाजिक प्राणी है पर आज वह केवल अपना स्वार्थ ही देख पा रहा है क्योंकि आधुनिक समाज ने आज हमारे लिए जहां इतनी सुविधाएं परोस दी हैं, वहीं हमें यह हमें हमारे अपनों से दूर भी करती जा रही है। हर दस में से एक इंसान इंटरनेट, मोबाइल, टीवी, कंप्यूटर आदि पर ही लगा दिखाई देता है। माता-पिता बच्चों को और बच्चे माता-पिता को समय नहीं दे पा रहे। पति पत्नी को और पत्नी पति को टाइम नहीं दे पा रही क्योंकि वह व्हाट्सएप, फेसबुक, टीवी आदि पर ही अपना समय व्यतीत कर रहे हैं। इन इलैक्ट्रॉनिक उपकरणों के कारण हम आलसी भी होते जा रहे हैं और अनेकों बीमारियों से भी घिरते जा रहे हैं क्योंकि इन उपकरणों के अत्यधिक उपयोग से इससे निकलने वाली रेडिएशनस हमें नुकसान पहुंचा रही हैं। आखिर, कहां जा रहा है हमारा समाज?

आज जरूरत इस बात की है कि लोगों के अंदर का गुस्सा शांत हो। जिंदगी में तनाव कुछ कम हो, संतुष्टि की भावना हो। इसके लिए हम सभी को मेहनत करनी होगी। इसके लिए जिम्मेदार तत्वों और कारणों को दूर करना होगा तथा उनका विरोध करने की क्षमता बढ़ाने की भी आवश्यकता होगी। थोड़ा संयम, संतुलित जीवन शैली, आधुनिक उपकरणों का संतुलित प्रयोग, परिवार में आपसी प्रेम एवं सहयोग, पारस्परिक विचार-विमर्श तथा एक-दूसरे को समय देकर ही हम संतुलित जीवन जी पाएंगे और प्रसन्न रहेंगे।



निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिनु निज भाषा ज्ञान के, मिटै न हिय को शूल॥



भरा नहीं जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नहीं।
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमें स्वदेश का प्यार नहीं॥



हिन्दी साहित्य में योगदान : सुभद्रा कुमारी चौहान

एस.पी. तिवारी*

हिन्दी की सुप्रसिद्ध कवयित्री और लेखिका सुश्री सुभद्रा कुमारी चौहान का जन्म नागपंचमी के दिन 16 अगस्त 1904 को इलाहाबाद के पास निहालपुर गांव में हुआ था। उनके पिता का नाम ठाकुर रामनाथ सिंह था जो एक शिक्षा प्रेमी थे। उनकी चार बहनें और दो भाई थे। उनका जन्म एक जमींदार परिवार में हुआ था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा उनके पिता की देख-रेख में हुई थी। उनके दो काव्य संग्रह प्रकाशित हुए लेकिन उनकी प्रसिद्धि उनकी कविता "झांसी की रानी" से हुई। उनमें राष्ट्रीय चेतना की भावना फूट-फूट कर भरी थी। स्वाधीनता संग्राम के समय दो बार जेल की यातनाएं सहने के बाद उन्होंने अपनी अनुभूतियों को कहानी में भी व्यक्त किया था। उनका चित्रण सरल भाषा शैली में होने के कारण उनकी रचनाएं हृदय स्पर्शी हैं।

बाल्यकाल से ही वे कविता लिखने लगी थी। उनका विवाह सन् 1919 में खण्डवा (मध्य प्रदेश) के ठाकुर लक्ष्मण सिंह के साथ हुआ। विवाह के बाद वे जबलपुर आ गई थी। सन् 1921 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वाली वह प्रथम महिला थी। वे दो बार जेल भी गई थी। सुभद्रा कुमारी चौहान की जीवनी, इनकी पुत्री सुधा चौहान ने मिला तेज से तेज नामक पुस्तक में लिखी है। वे एक रचनाकार होने के साथ-साथ स्वतंत्रता संग्राम सेनानी भी थी। डा0 मंगला अनुजा की पुस्तक सुभद्रा कुमारी चौहान भी उनके साहित्यिक व स्वाधीनता संग्राम के जीवन पर प्रकाश डालती हैं। उनकी कविता में स्वाधीनता आंदोलन के जरिए नेत्रत्व को प्रदान किया है। उनका निधन 15 फरवरी 1948 को एक कार दुर्घटना में हुआ।

बिखरे मोती उनका पहला कहानी संग्रह है जो 1932 में छपा। इसमें भग्नावशेष, पापीपेट, होली, परिवर्तन, मंझली रानी, दृष्टिकोण, कदम के फूल, किस्मत, एकादशी, मछुए की बेटा, आहुति, अमराई, थाती, अनुरोध व ग्रामीणा कुल 15 कहानियां हैं। उन कहानियों की भाषा सरल बोलचाल की भाषा है। अधिकांश कहानियां नारी विमर्श पर केन्द्रित हैं। 'उन्मादिनी' शीर्षक से उनका दूसरा कथा संग्रह 1934 में छपा। इसमें उन्मादिनी, असमंजस, अभियुक्त, सोने की कंठी, नारी हृदय, पवित्र

ईर्ष्या, अंगूठी की खोज, चढ़ा दिमाग व वेश्या की लड़की कुल 09 कहानियां हैं। इन सब कहानियों में सामाजिक व पारिवारिक परिदृश्य की झलक है। 'सीधे सादे चित्र' सुभद्रा कुमारी चौहान का तीसरा व अंतिम कथा संग्रह है जो 1947 में छपा। इसमें कुल 14 कहानियां हैं। रूपा, कैलाशी नानी, बिआल्हा, कल्याणी, दो साथी, प्रोफेसर मित्रा, दुराचारी व मंगला— इन 08 कहानियों की कथावस्तु नारी प्रधान पारिवारिक, सामाजिक समस्याएं हैं। हींगवाला, राही, तांगेवाला, व गुलाब सिंह कहानियां राष्ट्रीय विषयों पर आधारित हैं। सुभद्रा कुमारी चौहान ने कुल 46 कहानियां लिखी और अपनी व्यापक कथा दृष्टि व भाषा शैली से वे एक अति लोकप्रिय कथाकार के रूप में हिन्दी साहित्य जगत में सुप्रतिष्ठित हैं।

इनकी प्रमुख कृतियों में त्रिधारा, मुकुल (कविता संग्रह), बिखरे मोती (कहानी संग्रह), झांसी की रानी इनकी बहुचर्चित रचना है। इनकी कुछ प्रतिनिधि रचनाएं निम्न प्रकार हैं:—

अनोखा दान, आराधना, इसका रोना, उपेक्षा, उल्लास, कलह—कारण, कोयल, खिलौने वाला, चलते समय, चिंता, जलियाँवाला बाग में बसंत, जीवन फूल, झांसी की रानी की समाधि पर, झिलमिल तारे, ठुकरा दो या प्यार करो, प्रतीक्षा, प्रियतम से, बिदाई, राखी की चुनौती, वीरों का कैसा हो वसंत, स्वदेश के प्रति हैं।

इनके साहसी व्यक्तित्व, देश प्रेम व साहित्यिक विचारधारा को देखते हुए भारतीय तट रक्षक सेना ने 28 अप्रैल 2006 को सुभद्रा कुमारी चौहान की राष्ट्र प्रेम की भावनी को सम्मान देने के लिए, एक नए नियुक्त जहाज को सुभद्रा कुमारी चौहान नाम दिया। भारतीय डाकतार विभाग ने 06 अगस्त 1976 को सुभद्रा कुमारी चौहान के सम्मान में 25 पैसे का एक डाक टिकट जारी किया।

देश की स्वतंत्रता के लिए असहयोग आन्दोलन में भाग लेने वाली प्रथम महिला द्वारा आन्दोलन के साथ-साथ हिंदी साहित्य के लिए दिए गए योगदान के लिए देश को गर्व है।

* सहायक प्रबंधक (राजभाषा), निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

तेरे नयना क्यूं भर आए

रजनी सूद*

यूं तो समाज में हर तरह के प्राणी हैं। कोई मीठा बोलने वाला तो कोई कड़वा बोलने वाला, कोई किसी को देख कर दुःखी होता है तो कोई किसी को देखकर खुश होता है तभी तो विद्वानों ने कहा है आदमी अपने दुखों से कम दूसरों के सुखों से ज्यादा दुःखी रहता है। जब हम बहुत दुःखी होते हैं तो अपने मित्रों का सहारा लेते हैं, मित्रों से भी जब बात नहीं बनती तो हम अपने परिवार का सहारा लेते हैं परन्तु कुछ समस्याएं ऐसी होती हैं जिसमें परिवार भी कुछ नहीं कर सकता। अंत में हम थक-हार कर शरण लेते हैं, ईश्वर की। ईश्वर की शरण में जाते ही हमारी जुबान कुछ नहीं बोलती। बोलती हैं तो हमारी आँखे-आँसुओं की भाषा। जिसको केवल ईश्वर ही पढ़ सकता है। बिना कहे ही हमारी हर बात उस तक पहुंच जाती है।

आंसू नेत्रों की ढाल हैं, नयनों के शृंगार हैं। भावों का सागर है मन। पर जब से आदमी सुसभ्य हुआ है, सामाजिक मान-मर्यादा और परंपरा की डोर में बंधा है, समाज ने न जाने क्यों आंसुओं को निर्बलता का प्रतीक मान लिया है, जबकि कभी टूटते हैं तो कभी बिखरते हैं, विपत्तियों में इंसान ज्यादा निखरते हैं। सच तो यह है कि स्त्री हो या पुरुष, आंसू भावनाओं के मोती हैं, अव्यक्त भावों के जीते-जागते रूप। उनसे धुलकर ही हम पूरी तरह से पवित्र होते हैं, हमारी आत्मा को ताकत मिलती है। आंसुओं को आंतरिक दुर्बलता का लक्षण मानना, स्त्रीवत होने का प्रमाण समझना, आंखें भर जाने पर भी आंसुओं को भीतर ही भीतर पी लेना न तो बहादुरी का लक्षण है और न ही परिपक्व होने की निशानी। आंसू जानते हैं कौन अपना है, तभी तो अपनों के आगे निकलते हैं।

किसने कहा है कि आंसू न छलकाने वाला व्यक्ति वीर होता है और आंसू छलकाने वाला कमजोर। सच तो यह है कि रोने के लिए न सिर्फ भीतर संवेदनशील हृदय होना जरूरी है बल्कि इसके लिए तीव्र आत्मबल होना भी अनिवार्य है। जिसके मन में सरलता, सहृदयता, कोमलता, निश्चलता का ठिकाना है, जिसका मन दुराव-छिपाव, आडंबर, छल-कपट, अहंकार के दागों

से सना नहीं उसके नयनों से ही अश्रु अमृत बन गिर सकते हैं। आंसू सूखे से सूखे जीवन में रिमझिम बरसती बरखा है जिससे मन में बसी घनीभूत पीड़ा भी घुलकर मिट जाती है। ये करुणा के कण हैं, ये विरहा की पुकार है, यह भक्ति, श्रद्धा और अहिंसा के फूल हैं, स्नेह, वियोग के आंसू, प्रेमी-प्रेयसी के बीच मिलने-बिछुड़ने के आंसू, औरों के दुःख में रोती करुणामयी आंखों से निकलते हीरे से भी अनमोल आंसू। भला इनमें से कौन से कमजोरी के सूचक आंसू हैं। सभी में वह गरिमा है जिसका कोई सानी नहीं।

जीवन में जब उमड़ कर भावनाओं का नीर प्रस्फुटित होना चाहे, आंखें छलछलाने को और पलकें भीगने को आतुर हों तो आंखों को छलछलाने और पलकों को भीगने दो। कलियों के झड़ने से ही समीर सुरक्षित होती है, खुशबू दूर-दूर तक फैलती है। क्या आपने कभी अहसास किया है कि जब आप बहुत दुःखी होते हैं और जिंदगी की परेशानियों में आपको कोई रास्ता नज़र नहीं आता तब आपका मन करता है कि आप खूब रोएं, और जब आप रो रहे हैं तो उसके बाद आपका मन हल्का हो जाता है आपको ऐसा लगता है कि परेशानी कुछ कम हो गई है।

आंसू जिंदगी को भावनाओं से जोड़े रखते हैं, जहाँ हमारा स्वार्थ समाप्त होता है, वहीं से इंसानियत आरंभ होती है। लोग कहते हैं आदमी को अमीर होना चाहिए और मेरा मानना है कि आदमी का जमीर होना चाहिए। इसलिए जब ईश्वर खुशियां दे तो हंसिए जरूर और उसमें सब को शामिल भी कीजिए परंतु जब ईश्वर दुःख दे तो उसे केवल अपनों से ही बांटिए और जब रोएं तो अकेले बैठकर रोएं और यह बात सत्य भी है कि रोना तो हमें अकेले ही पड़ता है।

वक्त बीत जाए तो लोग भुला देते हैं,
बेवजह लोग अपनों को भी रुला देते हैं।
जो दीये रात भर रोशनी देते हैं,
सुबह होते ही लोग उसे बुझा देते हैं।

जिंदगी ऐसी जियो कि जिंदगी को भी अफसोस न हो कि वह आपके पास क्यूं आई। □

* वरिष्ठ सहायक प्रबंधक, निगमित कार्यालय, नई दिल्ली

मित्र या मुसीबत

प्रो. बलवंत रंगीला*

पंजाब-हरियाणा की धरती की मिली-जुली महक से सराबोर बचपन के एक लंगोटिया मित्र नौबत राय से अचानक एक शादी समारोह में मुलाकात हो गई। वैसे हरियाणा का आदमी सीधी बात नहीं करता, ऊपर से उसने पंजाब का पानी भी पीया हो तो सुभान अल्ला।

वह असामान्य गर्मजोशी से आलिंगन करके ऐसे मिला कि मैं अपनी पसलियों की खैर मनाने लगा। उसके शिकंजे से छूटने के बाद मुश्किल से संभल पाया। उसने छूटते ही पहला प्रश्न दागा, रंगीला जी, क्या हाल-चाल हैं? मैंने कहा हाल बढ़िया है और चाल वही है बेढंगी, जो पहले थी, वह अब भी है।

आखिर मैं भी हरियाणा का ठहरा। एक प्रकार से मैं अखिल भारतीय हो गया हूँ। मेरा निकास हरियाणा का, आवास पंजाब का व निवास दिल्ली का है। पांच-सात प्रतिशत उत्तर प्रदेश का और दो-चार प्रतिशत महाराष्ट्र का भी हूँ क्योंकि वहां भी साल में महीने-दो-महीने रहना पड़ता है। कुल मिलाकर लोग मुझे पंजाबी-हरियाणवी-दिल्ली का देहाती कहते हैं। पुराने पड़ोसी मित्र नौबत राय ने तपाक से फरमाया 'चलो, चाल तो जैसी है सो है पर आपका हाल तो बेहाल है। क्या हो गया आपको, आधे ही रह गए हो सूख कर। कहीं सोंख तो नहीं हो गया। बड़ी नामुराद बीमारी है। जोर पकड़ ले तो आदमी चलता-फिलता कंकाल नज़र आता है।

रात को तो घरवाली भी डरकर भागती होगी, अब तो जनाब नाम से रंगीला रह गए, सभी रंग तो काफूर हो गए। बकझक की उसकी गाड़ी जरा सी रुकी तो मैं बोल पड़ा - आपको ऐसे ही लगता है। मैं बिल्कुल ठीक हूँ। मित्र - ठीक कैसे हो, खुद को पता नहीं चलता, कविता लिखने के पीछे हाथ धोकर पड़े रहते हो, न खाने का होश न पीने का हवास। भगवान की सबसे कीमती देन सेहत को सम्भाल नहीं पाते। सच है 'जाम उन्हीं को मिलती है, जिन्हें पीना नहीं आता' मानो न मानो जरूर आपको किसी गम्भीर बीमारी ने जकड़ लिया है।

चलो, अभी चलो। मैं आपको अपने गाँव के नामी ओझा वैद्यराज भोगी लाल के पास ले चलूँ। वे गजब के हकीम हैं - ऐसे-ऐसे काढ़े पिलाते हैं कि पीते वक्त तो नानी याद आ

जाती है, मगर पीते ही 'काढ़ा अंदर और रोग जालंधर' वाली कहावत सच हो जाती है। उस जादूगर की बातों में पत्नी व बेटा भी आ गए और मेरे साथ तुरन्त चलने को तैयार हो बैठे। न-न करते मुझे उनके साथ वैद्यनुमा ओझा के पास जाना ही पड़ा।



ओझा भोगी लाल आठ फुटी खाट पर गहरे लाल कपड़ों में सुसज्जित पलाथी मार कर बैठे हुए थे। उनकी भारी-भरकम काया, अड़सठ इंच घेरे वाला पेट, भीमकाय तरबूज जितना सिर देखते ही बनता था। जोर से खांसे और बोले, आओ, आगे आओ बेटा, सही समय पर आए हो। काया शोधन आसन अभी-अभी तैयार हुआ है। पीओगे तो युग-युग जीओगे। आयुर्वेद में शोधन क्रिया पहला उपचार है जिससे तन के सभी विकार हवा हो जाते हैं। आंखे बंद कर, जी कड़ा करके यह सारा का सारा पी जाओ। फिर देखना इसका कमाल। राजा महाराजा इसकी प्रशंसा करते नहीं अघाते।

मैंने काँपते हृदय और थरथराते हाथों से तथाकथित आसन का डोंगा पकड़ा और एक-एक कर पीने लगा। मित्र नौबत राय पीठ थपथपाते रहे और मैंने जैसे-तैसे उसे खत्म किया तो दिन में तारे नज़र आने लगे। ओझा वैद्य भोगी लाल ने कहा 'ईनाम ठीक होने पर ही लूंगा। मैंने सोचा जीवित रहा, तो ही।

मुश्किल से घर पहुंचे तो पेट में दर्द शुरू। ऐसा दर्द कि वाशरूम का दरवाजा बंद करने का अवसर भी नहीं मिल रहा था। दो घंटे के अन्तराल में हालत गम्भीर हो गई। पास के अपोलो हस्पताल में दाखिल होना पड़ा। डॉ. अग्रवाल ने कहा कि आधा घंटा और अपोलो में न आते तो राम नाम सत्य हो जाता है।

पूरे पांच दिन हस्पताल में मेहमान नवाजी हुई। पूरे डेढ़ लाख का बिल चुकाया और 50 हजार की दवाइयां ऊपर से लेनी पड़ी, तब जाकर जान बची और लाखों पाए।



* कवि, जी-97, सरिता विहार, नई दिल्ली



निगम द्वारा आयोजित खेल गतिविधियां

निगम खेलों को प्रोत्साहित करने के उद्देश्य से समय-समय पर विभिन्न खेल-गतिविधियों का आयोजन करता है। इसके अतिरिक्त निगम द्वारा खेल छात्रवृत्तियाँ भी प्रदान की जाती हैं जिसके अनुसरण में अक्टूबर, 2017 में 24 खिलाड़ियों का चयन बैडमिंटन, टेबल टेनिस एवं क्रिकेट के लिए किया गया। इस छात्रवृत्ति के परिणामस्वरूप खिलाड़ी अपने-अपने खेलों में अच्छा प्रदर्शन कर रहे हैं। निगम के छात्रवृत्ति प्राप्त खिलाड़ियों की अलग-अलग राज्यों से राज्य टीम के लिए चयन हुआ और वह अपने राज्य का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। जिसका राज्यवार विवरण इस प्रकार है :-

1. श्री सिमरनजीत सिंह – दिल्ली से
2. शुभम रोहेला – हरियाणा से
3. शुभम अग्रवाल – उत्तर प्रदेश से
4. मोहन राणा – उत्तर प्रदेश से
5. प्रांजल सैनी – अंडर 19 में उत्तर प्रदेश से चयनित हुए

बैडमिंटन प्रतियोगिता

निगम के कौसतु रावत ने अखिल भारतीय स्तर पर बैडमिंटन प्रतियोगिता में टॉप-8 में स्थान प्राप्त किया।

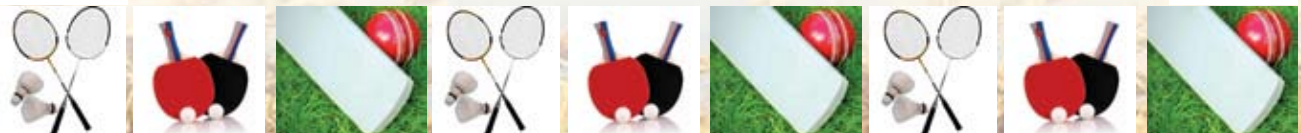
टेबल टेनिस प्रतियोगिता

यह निगम के लिए प्रसन्नता की बात है कि आगामी जून माह में लॉस एंजेल्स (अमेरिका) में आयोजित होने वाली World Veterain Championship में निगम के दो खिलाड़ियों का चयन Indian Veterain Team में हुआ है।

क्रिकेट

निगम की क्रिकेट टीम द्वारा डी डी सी ए क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया गया जिसमें निगम ने 7 मैचों में से 4 में विजय प्राप्त की। इसके अलावा साहिबजादे क्रिकेट टूर्नामेंट में भी निगम की टीम क्वार्टर फाइनल तक पहुँची।

निगम के खिलाड़ियों द्वारा विभिन्न खेल गतिविधियों में भाग लेकर लगातार अच्छा प्रदर्शन करना इस बात का प्रमाण है कि खेलों को आगे बढ़ाने में प्रबंधन का सदैव महत्वपूर्ण योगदान रहा है और भविष्य में भी इस दिशा में आगे बढ़ने के निरंतर प्रयास जारी रखे जाएँगे।





सत्यनिष्ठा प्रतिज्ञा

मेरा विश्वास है कि हमारे देश की आर्थिक, राजनीतिक तथा सामाजिक प्रगति में भ्रष्टाचार एक बड़ी बाधा है। मेरा विश्वास है कि भ्रष्टाचार का उन्मूलन करने के लिए सभी संबंधित पक्षों जैसे सरकार, नागरिकों तथा निजी क्षेत्र के एक साथ मिल कर कार्य करने की आवश्यकता है।

मेरा मानना है कि प्रत्येक नागरिक को सतर्क होना चाहिए तथा उसे सदैव ईमानदारी तथा सत्यनिष्ठा के उच्चतम मानकों के प्रति वचनबद्ध होना चाहिए तथा भ्रष्टाचार के विरुद्ध संघर्ष में साथ देना चाहिए।

अतः मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि :-

- जीवन के सभी क्षेत्रों में ईमानदारी तथा कानून के नियमों का पालन करूँगा;
- ना तो रिश्वत लूँगा और ना ही रिश्वत दूँगा;
- सभी कार्य ईमानदारी तथा पारदर्शी रीति से करूँगा;
- जनहित में कार्य करूँगा;
- अपने निजी आचरण में ईमानदारी दिखाकर उदाहरण प्रस्तुत करूँगा;
- भ्रष्टाचार की किसी भी घटना की रिपोर्ट उचित एजेन्सी को दूँगा।



केन्द्रीय भण्डारण निगम

(भारत सरकार का उपक्रम)

4/1, सीरी इंस्टीच्यूशनल एरिया,
अगस्त क्रांति मार्ग, हौज खास,
नई दिल्ली-110 016